जि.प. उच्च प्राथ. शाळा मिरेगांव
पं.स. लाखनी, जि.प. भंडारा

प्रति-,

मा. प्राचार्य
जिल्हा शैक्षणिक सातत्यपूर्ण
व्यावसायिक विकास संस्था भंडारा
यांचे सेवेशी

संदर्भ- ① जा. क्र/जि. शै. सा. व्या. वि. संस्था भंडारा NCSL/4077/2019
दि. 17-10-2019

② मा. संचालक, महाराष्ट्र शैक्षणिक नियोजन व प्रशासन संस्था, औरंगाबाद यांचे पत्र जा.क्र/मी पा/ NCSL/ 2019-20/309 दि. 14.10.2019

महोदय,

उपरोक्त संदर्भके अनुसार हमारी जि.प. उच्च प्राथमिक पाठशाला मिरेगाव की केस स्टडी प्रस्तुत करने का हमे अवसर प्राप्त हुआ। हमने हमारी स्कूल ने पुरी लगन से यह स्टडी कि है। प्रस्तुत केस स्टडी हमारी टिम ने सभी समस्याओं का सफल सामना किया। इस केस स्टडी तयार करनेके लिए हमारे गटशिक्षणाधिकारी, सुलभक श्री नरेश नवखरे सर और हमारे केंद्रप्रमुख तथा गावके पदाधिकारीओंने बहोत मदत की। इसलिए मैं महाराष्ट्र शासन और सारे सिस्टमका आभारी हु।

[signature]

मुख्याध्यापक
जि.प. उच्च प्राथ. शाळा मिरेगांव
पं.स. लाखनी

(Case Study)

राष्टोय शैक्षणिक नियोजन व प्रशासन संस्था नवी दिल्ली (NIEPA)

महाराष्ट राज्य विद्या प्राधिकरण पुणे (SCERT)

महाराष्ट शैक्षणिक नियोजन व प्रशासन संस्था औरगाबाद

जिल्हा शैक्षणिक सातत्यपुर्ण व्यवसायीक विकास संस्था भंडारा

जिल्हा परिषद शालेय शिक्षण भंडारा,

पंचायत समिती लाखनी अंतर्गत

जिल्हा परिषद उच्च प्राथमीक पाठशाला

मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा पिन ४४१८०९

शैक्षणिक स्त्र— २०१९—२०

विभाग १

जिल्हा परिषद उच्च प्राथमीक पाठशाला

मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा पिन ४४१८०९

- **UDISE No- 27100503601**

विषय :— शालेय नेतृत्व अंतर्गत छात्रोंके अध्ययन में वृद्धी हो इसलीये समाज समुदाय के साथ कि हुई भागिदारी/सहभाग.

उपविषय :— विविध सहशालेय उपक्रमोंके माध्यम से छात्रोंके गुणवत्ता का विकास करना!

संशोधनकर्ता :— श्री. डमदेव पांडुरंग कहालकर प्रधानाध्यापक, (एम.ए. बि.एड) जि.प. उच्च प्राथमिक पाठशाला मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा पिन 441809 मोबाईल नं. 9764384189, 9022310881

सहकारी :— १) श्री. विनोद तुळशिराम सहदेवकर प.शि. (एम.ए. बि. एड.)

२) श्री. नाना लक्ष्मण कठाने स. शि. (बी. ए. डी. एड)

३) श्री. केशव वडेकर स. शि.

४) श्री. यशवंत गायधने स.शि.

५) श्री. पालीकचंद लक्ष्मण बिसेन स. शि. (बी.ए. डी.एड)

६) श्री. चंद्रशेखर कापगते स. शि.

शाळेचा Email ID . :— zillaparishadmiregaon@gmail.com

विभाग २

प्रस्तावना :—

जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक पाठशाला मिरेगांव पंचायत समिती लाखनी जि. भंडारा राज्य—महाराष्ट्र हमारी पाठशाला की इमारत इंग्लीश के '०' आकार में है । कुल वर्ग संख्या ७ है । कक्षा पहली से सातवी तक बच्चे पढते है । सभी छात्रोंको एकसाथ बैठने के लिए बडा हॉल है । हमारी स्कुल डिजीटल है । प्रोजेक्टर के माध्यम से हम सभी विषय को पढाते है । मध्यभाग में '०' आकार का एक खुला मैदान है और उसमें '०' आकार का एक छोटा बगीचा भि बनाया हुआ है । पाठशाला की इमारत को लगके पिछे दक्षिण दिशा मे 55 X 93 चौ मीटर का मैदान है । हमारी पाठशाला में अनेंक प्रकार के खेल, व्यायाम प्रकार, पोलीस भरतीपुर्व शिक्षा प्रशिक्षण दिया जाता है । मिरेगांव यह गांव नॅशनल हायवे ६ भेल प्रोजेक्ट के दक्षिण दिशा में ८ कि मी अंतर पर है । रस्ता झुडुपी जंगल से होकर जाता है । ग्राम मिरेगांव के पुर्व दिशा में चुलबंद नदि बहती है जो वैनगंगा नदी को जाकर मिलती है, जहॉ इंदिरा सागर धरन बना है । गॉव के पश्चिम दिशा में पाठशाला की इमारत को लगके एक तालाब और घना जंगल है, जो नागझिरा अभयारण्य का भाग बना है । गॉव के पास गिरोला पहाडी पर मॅग्निज की खदान है । गांव के लोग भाविक श्रद्धावान धार्मीक प्रवृत्ती के है । नदिकिनारे श्री संत किसनजी महाराज वटेश्वर इनका पावन धाम है जिससे आजुबाजुका परीसर आध्यात्म के संगित सें गुंजता रहता है । लोगोंका मुख्य व्यवसाय खेती पशुपालन है । गॉव में आदिवासी समुदाय के लोग रहते है । कुछ लोग मत्स्यपालन का काम करते है । कुछ जंगल पर निर्भर है । शिक्षा का अभाव होनेसें कुछ लोगों मे इच्छा शक्तिकी कमी है । गॉव में सभी समाज के लोग एकदुसरे के उत्सव में सहयोग करते है और एकता का परिचय देते है । गॉव मे दंडार, ड्रामा लोककला का भंडार है ।

''गांव नुसतं, गाव नसतं

प्रतिभेची ते, खाण असतं

नाना कलांचे, स्थान असतं

त्यांना समजण्या, मन लागतं''

हमारा मिरेगांव प्रतिभाशाली व्यतियोंका गॉव है । दांडपट्टा, भालाफेक, लाठीकाठी, पावडी इत्यादी खेल खेले जाते है । कोई पत्रकार, कोई नाटककार, कोई मुर्तीकार, कोई कलाकार ऐसे गुणी लोग यहॉ रहते है । इन कलाओंको आधुनीकतासे जोडना बाकी है ताकी इन सांस्कृतिक विरासत का ऱ्हास ना हो ।

❖ प्रभावि अध्ययन के लिए प्रभावशाली उपक्रम ❖

१) बिज संकलन/संग्रह :—

हम सब छात्राओसे मिलकर सत्र के सुरूवात में जुन जुलै महिने में तरह — तरह के बिज का हमनें संकलन किया । इसमें गवार, भेंडी, ककडी, करेला,दोडका, बरबटी, लौकी, आदी बिजोंका छात्रोंद्वारा बिजप्रसार किया । सबको हमने बाट दिया ।

इस उपक्रमसें छात्रोंमे वनस्पतीओंका परिचय हुआ । छात्रोंकी निरीक्षण क्षमता बढी और उनमे समज बढी और पाठशाला और समाज उनका मधुर संबंध बना ।

लोकमत

हटके स्टोरी

मिरेगाव शाळेत जुन्या बियाण्यांचे जतन

स्त्युत्य उपक्रम। जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पालांदूर : जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा मिरेगाव पंचायत समिती लाखनी येथे विशेष नाविण्यपुर्ण बहुउपयोगी बि-बियाणे जतन व संग्रह बियाणाचे वाटप प्रभारी मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांचे अध्यक्षतेखाली घेण्यात आला.

गावात दोनशे- सव्वादोनशेच्या जवळपास कुटूंब प्रत्येक कुटूंबात कोणते कोणते वाणाचे बी-बियाणे असते. चवळी, गवार, भेंडी, दोडका, तुर, बरबटी, पोपट, तुर घेवडा, वाल प्रत्येकाला आपले घरी विशेष वाणाचे बियाणे असल्याचा गर्व व अभिमान वाटतो. इतर शेजारी यांनी त्यांना त्यांचेकडे विशेष जातीचे असलेले बियाणे मागितले. तर द्यायला टाळाटाळ करतात. ग्रामीण भागात तशाप्रकारची मानसिकता काहीची असते. काहींच्या घरी दुर्मिळ अधिक पिक देणारे, रोग न येणारे बियाणे असते. गावात एकमेकांच्या घरी प्रत्येक जातीचे वाण पसरावे, यासाठी शिक्षक विनोद [illegible] नाना कठाणे, केशव वडेकर, यशवंत [illegible] पालिकचंद बिसने, चंद्रशेखर कापगते यांनी पुढाकार घेऊन विद्यार्थ्यांना त्याच्या घरी ज्या-ज्या जातीप्रजातीचे बि-बियाणे असेल ते आणण्याचे आवाहन प्रभारी मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांनी केले. विद्यार्थ्यांच्या आई-वडीलांचा सत्कार व्हावा, या उद्देशानी या कार्यक्रम, उपक्रमाचे आयोजन केले.

Hello Bhandara
Page No. 4 Aug 04, 2019

२) पत्रमैत्री :—

हमारी पाठशाला में हमनें छात्रोंको उनके मामा, काका, मित्र को पत्र लिखने का उपक्रम चलाया इसमें पत्रव्यवहार समज मे ंआया । पत्र लिखते समय बडों का आदर, मित्र को नमस्कार सह सब बाते छात्रोंमें वृद्धींगत हुयी । पत्रलेखन से छात्रोंने पत्रपेटी, पोस्टमास्टर, पिनकोड, अंतर्देशिय पत्र इन बातों का परिचय लिया । उनका उत्साह बढा । वर्तमानपत्र में फोटो देखकर वो रोमांचित हो उठे ।

पत्र लिखते समय वे अपनी भाषा मे व्यस्त हो रहे है और धिरे—धिरे प्रमाणित भाषा का उपयोग कर रहे है। जहॉ कठिणाइयॉ आती है । वहॉ छात्र अध्यापक को बिना झिझककर पुछते है ।

हम छात्रोंको छुट्टी का अर्ज लिखने को कहते है और उसमे ंपालक की स्वाक्षरी लेने को कहते है । इससे पालक अध्यापक और छात्र के बिच में आंतरक्रिया हुयीं ।

लोकमत

संडे अँकर । शिक्षकाची धडपड, मिरेगाव शाळेत नावीन्यपूर्ण उपक्रम

१२० मुलांनी लिहिले मामांना पत्र

पत्रप्रपंच

आधुनिक संवाद माध्यमांच्या गर्दीत एकेकाळी सर्वांच्या जिव्हाळ्याचे असलेले पोस्टकार्ड आता दिसेनासे झाले आहे. जुन्या काळातील संवाद माध्यमांची विद्यार्थ्यांना ओळख व्हावी यासाठी लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव शाळेत स्तुत्य उपक्रम राबविण्यात आला. मुख्याध्यापकांच्या मार्गदर्शनात एक दोन नव्हे तब्बल १२० मुलांनी आपल्या मामांना पत्र लिहिले.

मुखरू बागडे ।
लोकमत न्यूज नेटवर्क

पालांदूर : जुन्या काळात पत्र हे संदेशाचे प्रमुख साधन होते. १५ पैशात मिळणारे पत्र सर्वांच्या जिव्हाळ्याचा विषय होता. पोस्टमन दारासमोरून गेला की आपले पत्र आले की काय म्हणून अनेकजण दार उघडून बघायचे. महिन्याकाठी दहा बारा पत्र घरी यायचे. त्यात आप्त स्वकीयांची ख्याली खुशाली असायची. परंतु अलिकडे संवाद माध्यमात क्रांती झाली. तीन ते चार दिवसानंतर मिळणाऱ्या पत्रातील निरोपापेक्षा अवघ्या सेकंदात मिळणाऱ्या निरोपावर सर्वजण अवलंबून राहू लागले. व्हॉटस्‌ॲप, फेकबुक आदीच्या नादात पत्र अडगळीत पडले. गावागावातील पत्रपेट्या महिनोंमहिने उघडल्या जात नाहीत. हा प्रकार लक्षात येताच मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांनी विद्यार्थ्यांना पत्राचे महत्व समजावून सांगितले. एवढेच नाही तर मुलांच्या भावविश्वातील अत्यंत जिव्हाळ्याचे नाते असलेल्या मामाला पत्र लिहिण्यास सांगितले. एक दोन नव्हे तब्बल १२० विद्यार्थ्यांनी आपल्या मामाला पत्र लिहून नातेसंबंधाचे धागे मजबूत करायला प्रवृत्त केले.

यावेळी पोस्टातील विविध कामकाजाची माहिती देत लिफाफा, आंतरदेशीय पत्र, पोस्टकार्ड याच्या किमती किती आहेत हेही समजावून सांगितले. पत्र लेखनाचे महत्व, संस्कार, सभ्यता आणि संस्कृतीचे महत्वही या विद्यार्थ्यांना सांगितले. या उपक्रमासाठी विद्यार्थ्यांना डमदेव कहालकर, शिक्षक विनोद सहादेवकर, नाना कठाणे, यशवंत गायधने, पालिकचंद बिसने, चंद्रशेखर कापगते, केशव बढेकर यांनी सहकार्य केले. हा पत्रप्रपंच सध्या चर्चेचा विषय आहे.

Hello Bhandara
Page No. 1 Aug 04, 2019
Powered by: erelego.com

३) शाला प्रवेश जागृती :—

‘‘ चलो चलो स्कुल चले

सब पढे आगे बढे ।।’’

‘‘ चला चला शाळेला चला’’

ऐसी घोषणाएँ देते हुए हमने गॉव मे रॅली निकाली उससे पालकभेट की, गृहभेट की, इससे समाज का शिक्षक पाठशाला के प्रती लोगों का नजरीया सकारात्मक बना । 100% पटनोंदणीका उद्देश सफल बना ।

४) शालेय उपयोगी वस्तुओंकी दुकान तथा ड्रायफ्रुट्स :—

हमारा मिरेगांव दुर्गम भाग में होने के कारण छात्रोंको उपयोगी सामानके लिए दिक्कत होती थी। गांव की दुकान में पुरा सामान नही मिलता था। इसलिए हमने स्कुलमेही उपयोगी वस्तु तथा ड्रायफ्रुट्स की दुकान स्कुलमेही लगाइ। उसकी जिम्मेदारी जो बच्चे घर मे रहते थे उनको ही दि। इससे पेन, किताब, रीफील, पेन्सील, रबर, पीन आदी चिजे स्कुलमेंही मिलने लगी।

हमारे कुछ बच्चों को परिसर के प्रभाव से खर्रा, गुटखा, मसाला पुडी आदी चिजों का शौक लगा था। हमने उनसे छुटकारा पाने के लिए क्या खाना चाहीए और क्या नही खाना चाहीए इनका मार्गदर्शन पी.एच.सी. के डॉक्टरोंद्वारा किया। अच्छी चिजें खाने की आदत डालने के लिए हमने स्कुल मे बदाम, खारक, पिस्ता, पेनखजुर, अंजिर आदी चिजें रखे और उनके फायदे बताए। इनसे हमारे बच्चोंकी खर्रे कि आदत छूटी। वे अवकाश मे दुकान चलाने लगे और हिसाब करने लगे। जो बच्चे अक्सर घर मे रहा करते थे वे स्कुल में हरदिन आने लगे। और प्रसन्नता से अध्ययन करने लगे।

५) मुर्तीकारकी भेट (जन्माष्टमी) :—

हमारा मिरेगॉव कलाकारोंका गॉव है । लौकीक शिक्षा भलेही कम हो पर जिवन शिक्षा मे अग्रेसर है । जन्माष्टमी के पव्र पर गॉव के एक मुर्तीकार श्री. संजय मेश्राम ने कन्हैय्या की मुर्तीया बनायी थी । हम छात्रोंके साथ उनके घर गये और उनकी कलाओंको समजने की कोशिष की । उनसे कुछ सवाल किये । उन्होने मिट्‌टी के संस्कार और रंगसंगती के बारेमें बताकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया

हम सबने उनकी कला को समजा । इनसे छात्रों के मन में जिज्ञासा बढी । कुछ नया करणे की प्रेरणा मिली और अच्छा प्रभाव पडा । इस दृष्य का फोटो वर्तमानपत्र में आने से हम सब उल्हास से भर गये । और कुछ नया करणे की प्रेरणा मिली ।

“एक तरी अंगी असु दे कला

नाही तर काय पुका जन्मला!”

यह राष्ट्रसंतका कथन हम सबने याद कीया ।

लोकमत

जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा, मिरेगाव

पालांदूर : जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा मिरेगाव येथील वर्ग ७ चा वर्गातील विद्यार्थी व शिक्षक यांनी कृष्णमूर्तीकार संजय मेश्राम यांचे घरी क्षेत्रभेट दिली. मूर्ती बनविण्यासाठी कोणती व कशाप्रकारची माती लागते. मूर्ती कशी बनवितात. रंग कसे भरतात यांचे प्रा[illegible]क मार्गदर्शन विद्यार्थी शिक्षकांनी घेतले. मूर्ती बनविण्याची कला विद्यार्थ्यांना अवगत व्हावी. याचे ज्ञान विद्यार्थ्यांना या क्षेत्रभेटीतून प्राप्त झाले. शिक्षक डमदेव कहालकर, पालिकचंद बिसने, चंद्रशेखर कापगते, विनोद सहदेवकर उपस्थित होते.

Hello Bhandara
Page No. 2 Aug 29, 2019
Powered by: erelego.com

६) गणेश उत्सव :—

हमारी पाठशाला में हर साल गणेशोत्सव का आयोजन होता है । लोकमान्य तिलकजीने इस उत्सव को सार्वजनिक रूप दिया और राष्ट्रीय एकात्मता को साधते हुए स्वतंत्रता आंदोलन के लिए उपयोग में लाया । इस सार्वजनिक उत्सव को हमने छात्रोंके गुणवत्ता विकास में उपयोग किया । हमारे छात्रोने हरदिन गणेशजी के लिए फुलोंका हार बनाया । रंगमंच का उपयोग करते हुए पोतादौळ, चमचागोळी, निबंधस्पर्धा, पालक सभा, सहभोजन, हलदीकुंकु

आदि उपक्रम प्रतियोगीताओंका आयोजन किया गया । उत्सव के माध्यम से गॉव में एकता का परिचय हुआ । स्त्री—पुरूष समानता, श्रमप्रतिष्ठा संस्कृती रक्षण आदि मुल्योंका सहजताओंसे उत्सव में दर्शन हुआ प्रतियोंगीताओंमे प्राविण्यप्राप्त छात्रोंको पुरस्कार दिया गया । पुरी समयतालीका से काम करने से हमारा कुछभी नुकसान नही हुआ । गुणवत्ता में वृद्धिही हुयी ।

७) परा (धान के पौधे) लगानेका प्रात्याक्षिक (रोपना) :—

‘‘ आले रोवन्याचे दिसं
ढग दाटले अंबरी
आमी गाडलो रोवना
घेत अंगावरी सरी ।।’’

हमारी पाठशाला मे इसबार हमने परा लगाने का प्रात्याक्षीक छात्रोंके साथ किया । इस उपक्रम से हम किसान के साथ जुडे, श्रमप्रतिष्ठा संवेदनशिलता इन मुल्योंका संवर्धन हुआ । परा लगाते समय महिलाएँ पारंपारीक गीतोंका गान करती थी । हम सब ध्यान से सुनते थे, फिर हमने अपनी पाठ्क्रमकी कविताएँ पढी, उन्हेंभी अच्छा लगा । साथ में बैल की जोडी थी इससे भुतदया की भावना बढी ।

''रोवना गाडता गाडता
आमी पायला सपन
यंदा उगलं पिवरं सोनं
मंग गाऊ लागली गानं ।।''

सचमुच मे हमारा जमीन से, धरती माता से नाता उसदिन से बहुत गहरा बना । हम भिगे भि, किचड का आनंद भी लिए । किसान और महिलाएँ हमारे तरफ बडे कौतुहल से देखते थे । हम भी उनके समस्याओंको समझ रहे थे । किसानी जिवन को समजने में हमें बडी आसानी हुयी । बैल जोडी कों देखकर हमे ऐसा लगा –

'' **भुऱ्या बयलाची जोडी**
आता दिसली खुसखुस
तेही गेले आनंदुन
भेटल खावाल तनिस ।।''

हमारा यह उपक्रम गॉव मे , परीसर में चर्चा का विषय बना । सभीने सकारात्मक अभिप्राय दिया ।

८) शैक्षणिक रंगोली :—

घरके ऑगण मे हम रंगोली डालकर ऑगण को सजाते है । वैसेही हमने स्कुल का ऑगण शैक्षणीक रंगोलीयोंसे भर दिया । रंगोलीयों में हम अपनी प्रतिभाओं को निखारते है । चित्र, नक्षा, पर्वत, आदी निकालते है । हमने चावल के पिठ का सहारा लेते हुए मिलान, घटाव, गुणा, भाग, आदि गणितीय क्रियाओंको समझते है ।

बच्चे हरदिन सुविचार, मुहॉवरा, कवि और उनका पुरा नाम, कवि और कविता ऐसी जोडीयॉ सजाते थे । छात्र आनंद से अपने अपने कक्षा के सामने चौकट मे अपनी भावना, पाठ्यक्रम में अंश को चित्रीत करते थे । यह उपक्रम हमारा आज भी चल रहा है । इसका प्रयोग बच्चे अपने घर में भी करने लगें । इंग्लीश के शब्द घर के ऑगण मे लिखते है । इससे उनकी अभिव्यक्ती निरीक्षण क्षमता बढती है । और कुछ नया सिखने की चाह पैदा होती है ।

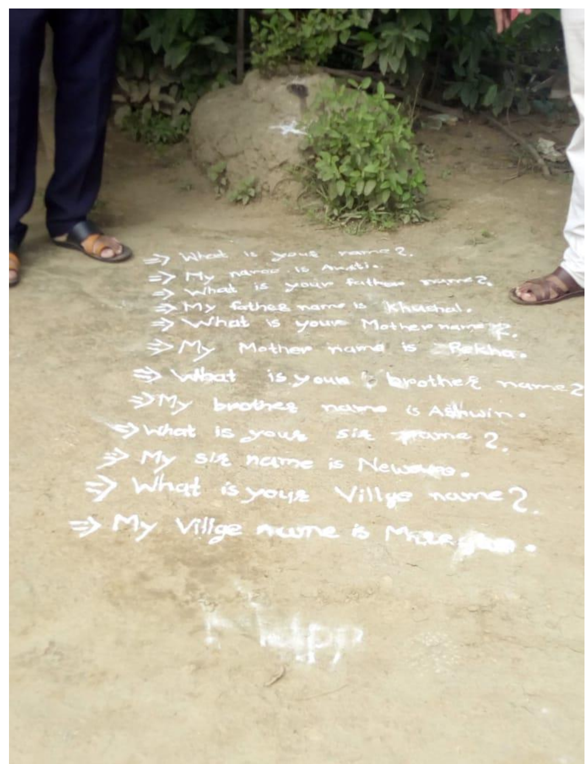

९) रक्षाबंधन :—

भारतवर्ष में यह त्योंहार सभी धर्म के लोग मनाते है । मुघल सम्राट हुमायुन ने भी राणी दुर्गावती के राखी को स्विकार करके राखी बांधी थी । यह त्यौहार हमे पवित्रता, बंधुभाव का संदेश देता है ।

हमारे छात्रोंने स्कुल में राखीयॉ बनवायी । और सभी छात्रोंको, अध्यापकोंको राखी बांधी । उपक्रमोंसे छात्रोंमे आत्मविश्वास की वृद्धी होती है । उपकी सुप्त क्षमताओंका विकास होता है । इस उपक्रमसें गांववालेभी बहुत खुश हुए । रंगोली हमारा हरदिन का काम बन गया ।

१०) मतदार जनजागृती :—

सन २०१९ के विधानसभा चुनाव सके लीये सरकार ने मतदार जनजागृती अभियान चलाया, इसमे प्रभातफेरी, ग्रामपंचायत मे दिव्यांग का प्रशिक्षण दिया

गया। हमारे गॉव मे चुनाव के प्रति अनास्था थी। आनेजानेका रास्ता खराब था इसलीये कुछ ग्रामस्थ बोलते थे की हम वोट भी नही देंगे। हमने मैदान मे कुछ स्लोगन लिखे, मोहरी की बीज डालकर १) मतदार तु जागा हो लोकशाहीचा धागा हो, ऐसा लिखकर सजाया गया, अंकुर निकलने के बाद लिखा हुआ स्लोगन बहुत ही आकर्षक दिखता है। मा. नरेश नवखरे सर सुलक्षक इन्होने पिठ थपथपाइ। इस उपक्रमका परिणाम अच्छा हुआ, आंगण मे हमने ग्रामगिता की कुछ लाइने लिखी थी। इससे गांववाले खुश हुये और उनकी मतदान करणे के प्रती सकारात्मकता बढी।

विद्यार्थ्यांनी ढोल-ताशांच्या गजरात जनजागृती रॅली काढून नागरिकांचे लक्ष वेधून घेतले.

विद्यार्थ्यांनी काढली मतदार जागृती रॅली

मिरेगाव । जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळेचा पुढाकार

लोकमत न्यूज नेटवर्क

लाखनी : निवडणुकीच्या पार्श्वभूमीवर जिल्ह्यात ठिकठिकाणी

निवडणुकीसंदर्भात विद्यार्थ्यांमध्ये जागृतीसह सजग भविष्याची जाणीव निर्माण व्हावी यासाठी शिक्षक तथा पालक सेवा देण्यास तत्पर आहेत. विद्यार्थ्यांना लोकशाहीची शिकवण देण्यासोबतच त्यातील मूल्यही जोपासता आले पाहिजे. यावर या जागृतीचा खरा उद्देश आहे.

११) दिपोत्सव :—

दिवाली हमे ‘तमसो मा ज्योतीर्गमय’ का संदेश देती है। इसबार हमने दिवाली के दिन पाठशाला मे दिया लगवाया। लोगों की मदत ली। ज्ञान का मंदिर प्रकाशमान रहे

इसका खयाल रखा हमारे छात्रों ने घरघरसे दिये लाकर पाठशाला को प्रकाशीत कीया। दिवाली मे मुंह मीठा कीया जाता है। इसलीये हमारे प्रधानाध्यापक ने बुंदी के लड्डु और मिठाइया बाटी। सबका ध्यान हमारी पाठशाला की तरफ गया और मन का मैला चला गया। यह वार्ता हमने वर्तमानपत्र मे दि। फोटो देखकर गांववाले हर्षित हो उठे। हमारे उपक्रम से छात्रोंमें कृतीशिलता आइ । आत्मविश्वास बढा। वे अध्ययन के प्रति सकारात्मक बने।

"कल करे सो आज कर
आज करे सो अब,
पल मे परलय होवेगी
बहुरी करेगा कब।"

यह संत कबिरजीका कथन छात्रोंके दिल मे उतर गया।

लोकमत

विद्यार्थ्यांचा सहभाग : मिरेगाव जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळेचा उपक्रम

विद्यादानाच्या पवित्र मंदिरात दीपोत्सव

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पालांदूर : दिवाळी आनंदाचा व प्रकाशाचा पर्व. प्रत्येकाच्या घरात दिवाळी उत्सव ऐपतीने संपन्न होतो. सर्वांना समानतेची शिकवण देणाऱ्या विद्या मंदिरात सुध्दा दिवाळी अर्थात दिपोत्सव गावकऱ्यांच्या साक्षीने पार पाडावा. या हेतूने जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा मिरेगावने संगीत महफील सोबत घेत दिवाळी पार पाडली.

गावात गावभर रांगोळ्या व दिव्यांची रोषणाई असताना शाळेत मात्र अंधार. येथील दोन मंदिरात सुध्दा लाईटचा झगमगाट. पण ज्या पवित्र विद्यादानाच्या मंदिरात मात्र आंधार. ही सुत्र करणारी व्यवस्था मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांना त्रस्त करुन गेली.

त्यांनी गावात पालकांना, पदाधिकाऱ्यांना व विद्यार्थ्यांना सुचना देत शाळेत दिपोत्सव साजरा करण्याचा बेत आखला. दिपोत्सवाची सर्व तयारी सुसज्ज करीत सर्वांच्या साक्षीने शाळेत खऱ्या अर्थाने प्रकाशपर्व पार पडले. यावेळी पंचपकवानाचे फराळ व संगित मैफिल सुध्दा विद्यार्थ्यांच्या सहभागाने सजवत गावकऱ्यांना हर्षित केले.

कधी नव्हे तो दिवाळीचा अनोखा हर्ष गावात अनुभवायला मिळाला. यावेळी सरपंच महेश धुर्वे, संचालक वासुदेव तिरमारे, माजी सरपंच राजेश मेश्राम, ग्राम पंचायत सदस्य जितेंद्र धुर्वे, रविंद्र पाखमोडे, महेश धुर्वे, शाळा व्यवस्थापनसमिती अध्यक्ष चक्रधर तिरमारे तथा पालकवर्ग उपस्थितीत होते.

सदर उपक्रम तालुक्यात नव्हे तर जिल्ह्यात अभिनव ठरला. या उपक्रमासाठी सहायक शिक्षक विनोद सहदेवकर, बिसने, चंद्रशेखर कापगते, नाना कठाणे, केशव बडेकर आदींनी सहकार्य केले.

दिपोत्सवात सहभागी मुख्याध्यापक, विद्यार्थी व पालकगण.

"दिवाळीचा उत्सव शाळेत गावकऱ्यांच्या सहभागाने पार पाडला. प्रथम योग आला. मुख्याध्यापकाच्या अभिनव उपक्रमाने सगळ्याचे लक्ष वेधले असून खऱ्या अर्थाने विद्या मंदिरात असे उत्सव झाले पाहिजे.

- महेश धुर्वे, सरपंच

"विद्यार्थ्यांना सखोल ज्ञानाजर्नाचा कक्षा वाढाव्या, याकरिता आमचे प्रयत्न सुरु आहेत. मुख्याध्यापकांच्या कल्पक बुध्दीने असे उपक्रम राबवित असून विद्यार्थीही आनंदात आहेत.

- चक्रधर तिरमारे, अध्यक्ष, शाळा व्यवस्थापन समिती

Hello Bhandara
Page No. 2 Oct 29, 2019
Powered by: erelego.com

विभाग ३ रा

प्रस्तावना

बच्चों के मातापिता अज्ञानी अशिक्षीत और उनके सगेसंबंधी इनकी भी स्थिती वैसीही होने के कारण शिक्षा के प्रती सभी मे उदासीनता थी।

बच्चों के उपस्थिती का प्रमाण कम था। जब स्कुल चालु होती थी, तब कुछ बच्चे अपने रिस्तेदार के यहॉसे नही आते थे। जो आते थे उनके पास लेखन साहीत्य नही रहते थे। घर में किसानी काम होने के कारण बच्चे मॉ—बाप के साथ खेत मे चले जाते थे। घर मे माता पीता बच्चो के अभ्यास के बारे में नही बताते थे।स्कुल का परिसर स्वच्छ और आकर्षक नही था। कचरा कुडा जहॉ वहॉ गीरा रहता था। इसके कारण प्रसन्नता नही मिलती थी। बारीश का मुद्दा बनाकर बच्चे घरमेही रहते थे। कुछ बच्चे अपनें पालतु जानवर और छोटे भाई बहन कि देखभाली करने के लीए घर मे रूकते थे। इन सब समस्याओंके कारण बच्चों की गुणवत्ता मे बढोत्तरी नही होती थी। बच्चों कों पाठशाला मे जाना संकट जैसा लगता था। पाठशाला मे रंजकता की कमी थी। आनंद नही मिलता था। अध्यापक भी खुद के लडके जैसा व्यवहार नही करते थे। प्यारभरी नजर नही डालते थे। उनकी पुछताछ नही करते थे। पारीवारीक व्यवहार नही रखते। बच्चोंको मातापीता इनके साथ दुरी बनाकर रहते थे। यह पिछडें है। इनके उपर कोई असर होनेवाला नही ऐसे मानते थे। प्रधानाध्यापक डमदेव कहालकर इन्होने अध्यापक की सभा तय की, सभा मे हमे कुछ पाठशाला और अध्यापक इनका शिक्षा विभाग मे नाम हो, बच्चों की गुणवत्ता बढे, मातापीता बच्चों के तरफ ध्यान दे। बच्चों को हर दिन पाठशाला मे नियीमत रूप से भेजे। जिस चिज की जरूरत हो वह चिज खरीद के दे। छात्रों को किसानी काम में वह न इस्तेमाल करें। जानवर और छोटे भाई बहन इनकी देखभाल मे अपना समय न गवॉये। पाठशाला के उपर वह प्यार करें। अध्यापक, प्रधानाध्यापक इनकी वह बात माने। बच्चों कों घर में अध्यापक ने क्या पढाया यह पुछे। बच्चोंसे चर्चा करें।

इन सबके बारे मे अध्यापक और प्रधानाध्यापक क्या कर सकते है। इनके उपर चर्चा चली। कुछ अध्यापक यह नही हो सकता। यह पिछडें देहाती आदिवासी लोग है। यह नही समझ सकते ऐसे भी कहने लगे।

प्रधानाध्यापक डमदेव कहालकर बोले देखो, हर समस्या का समाधान निकलता है। निसर्ग में न्याय है। यह इतनी भारी समस्या नही है। मामुली बात है। यह समस्या तो हर पाठशाला में कमअधिक रूप में दिखाई देती है।

हम यह काम के लिये है। सरकार ने हमे जिम्मेदारी दि है। इसका बडा भारी मुल्य भी पगार के रूप में मिलता है। हमारा दायीत्व और कर्तव्य का यह एक हिस्सा है। बच्चों के लिए कुछ करणा यह प्रत्यक्ष रूप से भगवान के लिए कुछ करणे जैसा है। हम आप भी सभी ने जिस समय शिक्षा ग्रहण की उसी समय ऐसी ही हालात थी।

हमे यह छोटीसी समस्या से हार मानना अच्छी बात नही। हार मानना यह हमारी कमजोरी है। ऐसी प्रधानाध्यापक डमदेव कहालकर की बात सुनकर पालीकचंद बिसने अध्यापक और चंद्रशेखर कापगते एकसाथ बोले। प्रधानाध्यापक जी हम यह कर सकते है। हमारा यह दायीत्व और कर्तव्य है। इनकी हॉ मे हॉ मिलाकर अध्यापक सहदेवकर और यशवंत गायधने बोले सरजी हो सकता है। हम कर सकते है। बाद मे नाना कठाने अध्यापक और केशव वडेकर भी शामील हो गये।

सब लोग एक होकर हम विद्यार्थी पालक इनको साथ लेकर यह चित्र बदल सकते है। ऐसा सभा मे निर्णय लिया गया। प्रधानाध्यापक बोले शाब्बास! वाह !क्या अच्छी बात निकली। इस उत्साहपुर्ण सभा से सभी की उम्मीद बढी। सभी के सहयोग से एक योजना बनाई गई जिस योजना से उपरी सब समस्याका निराकरण सहजता से निकल पडा। सर्वप्रथम प्रधानाध्यापक ने सभी अध्यापक को अलग अलग उनकी क्षमता और रूची की अनुरूप कार्य का विभाजन किया।

१) श्री. विनोद सहदेवकर : English विषय में अपना सहयोग सभी छात्रों के लीये विशेषत: पुर्ण ढंग से रखे। छात्र अपने अपने घर मे मातापीता के साथ English में बात करें। और शालेय प्रशासन में प्रधानाध्यापक को सहयोग करें।

२) श्री. यशवंत गायधने: बच्चोंके हस्ताक्षर सुधारमें सहयोग करें। बच्चों के बदले हुए हस्ताक्षर को देखकर मातापीता प्रसन्न और संतुष्ट बनें। और दुसरी जिम्मेदारी शालेय बगीचा की सुंदरता के लिए प्रयत्नरत रहें जिनसे पाठशाला में आतेंही हर आदमी की प्रसन्नता बढें।

लेझीम — नृत्य — आदिवासी गॉव होनेके कारण उनको संगीत और नृत्य में विशेष रूची है। गॉव में कोई भी सार्वजनिक उत्सव जबजब होता है तबतब लेझीम—

नृत्य सें वह कार्यक्रमोंकी शोभा बढाने के काम में लेझीम—नृत्य पथक आगे रहे। इस कारण से गॉव और पाठशाला इनके मधुर संबंध स्थापीत हो।

३) श्री. नाना कठाणे : अध्यापक शालेय परिसर मे कोइ कुडा कचरा पडा न रहे। शालेय परिसर अधिकाधिक सुंदर दिखता रहे। जिनसे छात्र और उनके माता पिता हर्षित हो उठे। मुतारीघर और शौच्छालय ठिक व्यवस्थित रहे। इनके लिये छात्रोंकी मदत से देखभाल करें। परिपाठ और भोजन के समय स्वयं उपस्थित होकर जिम्मेदारी संभाले। कक्षा पहली के छात्र इनके रंजकता से भरा हुआ ज्ञान बॉटे। जिनसें पहली कक्षा के छात्र आनंदीत और निर्भय रहें।

४) श्री. केशव वडेकर : श्री. नाना कठाणे इनके हर काम मे मदत करें। हर दिन छात्र की गिणती का गोषवारा इनका टिपन करें। ज्ञानरचनावादी पद्धती से अध्यापन करें। जिन कारण से छात्र आनंदीत हो उठे। और मुलभुत क्षमता विकसीत हो उठे।

५) श्री. पालीकचंद बिसने : पाठशाला के सभी छात्र संगित मे आगे बढे इसके लीए हार्मोनियम/बासरी/तबला इन संगीत साहीत्य का इस्तेमाल करके बच्चों को संगित की प्रेरणा हो। मॉ—बाप घरके सभी सदस्य इनको वह छात्र घर जाकर संगित सुनाए । और आदिवासी गॉव होने के कारण उन घर परीवार मे जो उनका परंपरा से आया संगित ज्ञान पाठशाला मे छात्र ले आए ।

स्वयं पालिकचंद बिसने अध्यापक कवि होने के कारण बच्चे कविता करें एवं कवि बनें ऐसी कार्यप्रणाली तैयार करें। पाठशाला में सांस्कृतीक कार्यक्रम बनते रहे ऐसी योजना तैयार करें। सभी छात्रों को गणित विषय की, मुलभुत क्रिया बडी सहजता से हासील हो ऐसी कार्यप्रणाली तैयार करें। तंत्रस्नेही ज्ञान विज्ञान कार्यानुभव, चित्रकला इन सबमें बच्चे रूचि रखें ऐसी जिम्मेदारी संभाले।

६) चंद्रशेखर कापगते : तंत्रस्नेही अध्यापक होने के नाते सभी कक्षाओं के छात्रों का उनके कक्षा के अनुरूप ज्ञान प्रोजेक्टर के माध्यम से देना तुरंत सुरू करें। संगणक साक्षरता हर बच्चे में विकसीत करणे का नियोजन आयोजन करें।

पाठशाला विविध शैक्षणिक प्रतियोगीता का आयोजन करें। जिस कारण से दुनिया का नया ज्ञान आदिवासी बच्चों को मिले। यह देखकर मातापिता अचंबीत हो उठे। जिनसे पाठशाला के प्रति माता पिता का आकर्षण बढे।

नियोजनबद्ध धोरण :

किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिये योजना बद्ध धोरण जरूरी होता है। ‘‘Plan your work & work your plan ’’ इस तत्व के अनुसार हम सब कार्य मे जुड गये। कल हम क्या थे। और आज हम क्या है? यह कल हमने क्या कीया और आज हम क्या कर रहे है। इस पर हमारा यश निर्भर होता है। इन उपरी तत्वों को लेकर कब क्या करना है इसका फल हम सबने एकसाथ बैठकर नियोजन किया।

जुनः— जुन महिणेमें विद्यार्थी पालक जनजागृती रॅली का आयोजन बॅड पथक और घोषनाओंके साथ कीया।

‘‘चलो चलो पाठशाला में चलों,

मत रहो, मत रहो, घर मे कोई मत रहो,

चलो चलो पाठशाला में चलों’’

इस जनजागरण रॅली से माता पिता सज्ज हो उठे और बच्चे हर दिन 100 % आने लगे।

बिजसंग्रह और वितरण :

अनेक प्रकारके पौधे इनके बिजों का संकलन छात्रों के माध्यम से किया गया और जिनके घर में जो जीस जाती के पौधों का बिज नही है उसें बडें सन्मान के साथ दिया गया।

इन उपक्रम—कार्यक्रम से छात्रों के माता पिता संतुष्ट और समाधानी बने। ग्रामपंचायत के माध्यम से मिले पौधे छात्रों को घर खे?त मे लगानें के लिये जिम्मेदारी के साथ दिये गयें। इस उपक्रम से वृक्षवल्ली आम्हा सोयरे वनचरे यह संत तुकाराम ने दिया हुआ संदेश सफल होने मे सहयोग मिला। निसर्गभक्ती और पर्यावरण प्रेम प्रंकट करणे का अवसर सफल हुआ।

जुलैः— हम विदर्भ के वासी है। विदर्भ में जुलै महिनें में बारीश का मौसम सुरू होणे से किसान धान की खेती करणे मे व्यस्त रहते है। हरएक के पास कुछ ना कुछ खेती होती है। इस कारण से बच्चे पाठशाला में नही आते थे। हमने उनके माता पिता को सज्ज कर दिया। इनके कारण कर बच्चा पाठशाला में आने लगा। रोपना यह एक खेती की विधी होती है। बच्चों को रोपना में सामील होना बहोत पसंद होता है। यह ध्यान मे रखकर हम सबके बच्चे पाठशाला के बाजु के खेत मे रोपना करने के लीए जुलै के मध्य मे जाने का नियोजन किया।

जुलै में जिस दिन बारीश नही बरस रही थी उस दिन हम सब रोपना के लिए खेत में भोजन अवकाश में चले गये।

बच्चों में श्रम प्रतिष्ठा, संवेदनशिलता बेटे — बेटी एकसाथ एक होकर रोपना करणे से स्त्रि— पुरूष समानता यह मुल्य स्थापीत हुए । और आदिवासी गॉव के किसान और पाठशाला के अध्यापक इनका संबंध स्थापीत हुआ। किसान जिस विपरीत कठिन परिस्थीती में झुंजते हुए दिखें उससे अनेक प्रति छात्रों के और अध्यापकोंके दिल में संवेदनशिलता यह मुल्य विकसीत हुआ।

गॉव की महिलाए रोपना करते समय पारंपारीक लोकगितोंका गायन करते हुए दिखी। उनके साथ छात्रों ने ‘‘ धरती चे आम्ही लेकरें ’’ भाग्यवान यह कविता का गायन किया। महिला की तरफ सें हमनें लोकगित सीखें तो हमने उनको पाठ्यक्रम की कविता सिखाइ। इन उपक्रम से पारंपारीक लोकगीतोंका छात्रों ने सन्मान और स्विकार किया। एकप्रकारसे संस्कृती संवर्धन करणे का अवसर प्राप्त हुआ।

ऑगष्ट : अगस्त महिना सन उत्सव से भरा होता है। यह ध्यान में रखकर नियोजन किया गया। इस महिनें में आदिवासी गॉव में भजन— संकिर्तन, आराधना—उपासना होती है। यह ध्यान में रखकर बासरीवादक श्री पालकचंद बिसने अध्यापक बासरी और हार्मोनियम इनपर संगित गायन वादन सिखाएंगे, स्वतंत्रता दिन इस महिनेंके मध्य में आता

है। यह ध्यान में रखकर छात्रोंकी विविध शैक्षणिक, सांस्कृतीक, बौद्धीक स्पर्धा आयोजीत कि गइ। इस महिने में लोकमान्य टिलक जयंती, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रक्षाबंधन आदि उत्सव संपन्न करणे का निर्धार किया गया था वह संपन्न हुआ। रक्षाबंधन के समय छात्रोंके रक्षा बनाने की (राखी) शिक्षण प्रशिक्षण दिया गया। इससे बच्चों के माता पिता प्रभावित हुए । राखी खरीदना नही पडा। वह माता पिता कि बचत हुई। पाठशाला के सभी बेटी ने सभी बेटोंको भाई मानकर राखी बांधी। इन उपक्रम से बंधुभाव विकसीत हुआ। श्रीकृष्ण उत्सव के निमीत्य श्रीकृष्ण की मुर्ती बनाने वाले के घर पर सब छात्र पहुंचे। छात्रों ने मुर्ती की कला का अनुभव किया। मुर्ति बनाने की कला की सिख उस निमीत्त से मिली।

ऑगस्त मे देहात मे ज्यादा बारीश होने से गांव की गल्ली मे किचड होता है। उनपर चलने के लिए देहात मे लकडी से बनी पावडी का खेल परंपरा से खेलने का शौक देहात के बच्चों को होता है। यह ध्यान मे रखकर पावडी बनाकर चलना सिखाया गया। इसमें ऑख, पॉव, हात आदि सभी अवयवोंका तालमेल बच्चों मे दिखा।

सप्टेंबर :— १) **गणेशोत्सव** : हमारी पाठशाला में हरवर्ष गॉव के लोगोंद्वारा गणेशोत्सव मनाया जाता है। यही उत्सव केवल गॉव का नही तो यह पाठशाला का ही है ऐसा हमसब अध्यापक समजते है। गॉव के

लोग भी यह उत्सव पाठशाला का ना होकर हमारे गॉव का उत्सव है इस भावना से काम करते है।

इस उत्सव के माध्यम से हमे विविध स्पर्धाओंका आयोजन करना, समाजसे संबंध स्थापीत करणा, सहभोजन करना, और सांस्कृतीक जतन करणा, राष्ट्रीय एकात्मता यह मुल्य विकसीत करणा यह सारे मुद्दे हमारे इस उत्सव के माध्यम से सफल हुए ।

इस बार भी हमनें रंगमंच का फायदा उठाया हमारे बच्चे हरदिन फूलोंका हार बनाकर लाते थें। उत्सव के कार्यकाल मे हमने पोतादौड, चमचागोळी, निबंध स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा आदि प्रतीयोगीता का आयोजन कीया। हलदीकुंकु, काला, पालकसभा और सहभोजन का आयोजन करने से समाजीकरण की प्रक्रीया को बल मिला। पाठशाला और समाज, शिक्षक का प्रत्यक्ष संबंध स्थापीत हुआ।

राष्ट्रीय एकात्मता यह मुल्य इस उत्सव से साकार हुआ। बच्चोंको शिक्षकोंने मान्यवर के हस्ते बक्षीस वितरित किया गया, इस तरह इस उत्सव से हमने छात्र, शिक्षक और समाज के संबंध का त्रिकुट बनाया।

समाज समुदाय इनके साथ भागिदारी करणे का सुअवसर प्राप्त होनेवाला है। ऐसा सोच समझकर नियोजन धोरण कार्यान्वीत किया गया। और सफल किया गयज्ञं

२) शिक्षकदिन :— शिक्षकदिन ५ सप्तेंबर कों आनेवाला

है। बच्चों की अध्यापक की तरफ से कैसी और क्या आशा अपेक्षा होती है। अध्यापक ने कैसे और क्या पढाना। बच्चों की आशा रहती है। इसका अनुभव अध्यापक को होना चाहीए । यह ध्यान मे रखकर शिक्षकदिन के दिन बच्चे पढायेंगे शिक्षक नही पढायेंगे ऐसा हमारा नियोजन तय किया गया था।

उस दिन पढानेवाले छात्र अध्यापक के वेशभुषा मे पाठशाला में आये। उनमें से एक प्रधान अध्यापक की खुर्सी में विराजमान हुआ। परीचर का काम भी छात्रों नें कीया। उसदिन सब छात्र बेहद आनंदीत थे। पढानेवाले छात्र तो आनंद की खुशी मे बेहोश थे।

जिन माता पिता परिवार के बच्चे प्रधानअध्यापक, अध्यापक, परिचर बने थे उनकी प्रतिक्रीया बहोत अच्छी थी। मेरा बेटा, मेरी बेटी, एक दिन के लिए अध्यापक बनी/अध्यापक बना ऐसी चर्चा गॉव मोहल्ले, तालाब पानी का नल इन सब पर थी।

इन कार्यक्रम/उपक्रम सें पाठशाला की समाज समुदाय के साथ भागीदारी बनी। जिवन में अध्यापक का सन्मान कैसे करना। अध्यापक कैसें हो इसका ज्ञान छात्रोंको हुआ।

ऑक्टोंबर :– १) **बंध**

प्रशिक्षण :— ऑक्टोंबर महिनें में जिस धान का रोपन कीया था। वह फसल काटने की तैयारी मे आता है। काटनें के बाद इसको बांधने के लिए बंध बनाने का स्थानिक रोजगार गांव में अनेंक पिढी से चलते आया है। यह ध्यान मे रखकर सप्ताह में शनिवार को दप्तर मुक्त पाठशाला के अवसर पर बंध कैसे बनाये जाते है। बंध बेचने से कैसी आमदनी मिलती है। यदि छात्र मातापिता के यह कार्य में सहयोगी होता है तो बच्चों के माता पिता कैसे आनंदित होते है। यह ध्यान में रखकर ऑक्टोंबर के पहले शनिचर को दप्तर मुक्त पाठशाला के लिए बंध बनाने का नियोजन किया गया था।

उनपर अमल किया गया। सब छात्र हम कुछ कर सकते है। शिक्षण लेते लेते ही रूपया पैसा कमा सकते है। कौनसी तोभी कला हम आत्मसात करें। हम देहाती छात्र ऐसे स्थानिक उद्योग से रूपया पैसा कमा सकते है। यह रूप्या पैसे शिक्षा लेने के काम आ सकता है। ऐसा विश्वास छात्रों को हुआ। उनका आत्मविश्वास बढा। गॉव और घर मे उनका सन्मान बढा।

यह शिक्षा पाठशाला मे अध्यापकोंने छात्रोंको दि। इस परीणाम से बच्चोंके माता पीता हर्षित और आनंदित हो उठे। श्रम प्रतिष्ठा और स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता विकसीत की।

विद्यार्थ्यांना शिंदीच्या फांद्यापासून बंध बनविण्याचे प्रशिक्षण

लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव येथील जिल्हा परिषद शाळेचा उपक्रम

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पालांदूर (चौ.) : विद्यार्थ्यांना स्वावलंबी बनविण्याकरिता स्वयंरोजगार करताना शिक्षण घेता यावे, या उदात्त हेतूने प्रेरीत होत स्थानिक ठिकाणी नैसर्गिक अधिवासातून शून्य खर्चात उपलब्ध होत असलेल्या शिंदीच्या फांद्यापासून धानाचे गठ्ठे बांधण्याकरिता मुख्याध्यापक तथा आदर्श शिक्षक पुरस्कर्ते डमदेव कहालकर यांनी शाळेतच कार्यशाळा उभारून विद्यार्थ्यांना बंधचे धडे दिले.

स्पर्धेच्या काळात प्रत्येकालाच नोकरी शक्य नाही. निदान खेड्यात तरी अजीबात नाही. त्यामुळे विद्यार्थ्यांनी विद्यार्थी दशेपासूनच स्वयंरोजगाराचे धडे मिळावे. त्यांची कुशलता लक्षात घेऊन या उपक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. खरीप हंगाम कापणीच्या तोंडावर बंधाला मोठी मागणी आहे. तणसाचे बंध सगळ्यांना माहिती आहेत. यात मेहनत मोठी आहे. मात्र शिंदीच्या बंधाला व्यवस्थित गुंफण करीत शून्य खर्चात धान बांधण्याला उत्तम बांध कमी खर्चात शेतकऱ्याला मिळतो. हे हेरून कहालकर यांनी विद्यार्थ्यांना बंध तयार करण्याचे प्रशिक्षण देत गावकऱ्यांचे लक्ष वेधले.

याकरिता सहयोगी शिक्षक विनोद सहदेवकर, चंद्रशेखर कापगते, पालीकचंद बिसने, यशवंत गायधने, नाना कठाणे यांनी सहकार्य केले. या उपक्रमाचे केंद्रप्रमुख हरडे, शाळा व्यवस्थापन समिती अध्यक्ष चक्रधर तिरमारे यांनी कौतूक केले.

शिंदीच्या फांद्यापासून बंध बनविण्याचे प्रशिक्षण देताना डमदेव कहालकर.

शिक्षकांची दूरदृष्टी

- बंधाचा हंगाम किमान १५-२५ दिवस चालतो. यातून गावाला रोजगार मिळतो. प्रत्येक कर्त्या कुटुंबाला या हंगामात ७-१० हजार रुपयाची आमदनी होते. या व्यवसायाला खर्च शून्य असून गावाजवळ शिंदीचे झाडे मुबलक आहेत. आई वडीलांना मुलांच्या हातभाराने नक्कीच मदत होणार आहे. याकरिता शाळेचे महत्व व शिक्षकांची दूरदृष्टी कामाला आली हे विशेष.

२) वाचन प्रेरणा दिन : भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम इनका जन्मदिन वाचन प्रेरणा दिन के रूप मे मनाया जाता है, यह ध्यान में रखकर दि. १५ ऑक्टोंबर को वाचन प्रेरणा दिन उत्सव के रूप मे मनाने का नियोजन कर रखा था। इनके अनूरूप ग्रंथालय की सब किताबे बाहर निकाली गई। सब छात्रों कों किताबें पढनें के लिए दि गई। और हर छात्र अपने माता पिता के लिए घर में पढने के लिए दो किताबे ले गया। इसका परिणाम यह हुआ वाचन संस्कृती मे बढावा आ गया। जिन जिन माता पिता ने किताबें पढी वह आनंदित हो गये। पाठशाला और गांववाले इनमे स्नेहभाव बढा। और अंतर घटा। इस उपक्रम से गंथ संपदा के प्रति प्रेम बढा। पाठशाला और समाज समुदाय में पुस्तकरूपी डोर से संबंध बंध गयज्ञं

ना मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर.

लोकमत

बौद्धिकस्तर उंचाविण्यासाठी वाचन संस्कृती महत्त्वाची

डमदेव कहालकर । मिरेगाव शाळेत अनोखा उपक्रम

लोकमत न्यूज नेटवर्क

भंडारा : पुस्तक हेच खरे मित्र असतात, असे नेहमी म्हटले जाते. वाचण्यात ऐकण्यापेक्षा जास्त शक्ती व क्षमता लपली असते, असेही बहुतेकदा सांगितले जाते. कारण बौद्धिक उंचीचा स्तर वाढविण्यासाठी वाचन क्षमता विकसीत करणे अत्यंत महत्याचे आहे, असे प्रतिपादन मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांनी केले.

लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव येथील जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळेत विद्यार्थ्यांना वाचनाची व लेखनाची सवय लागावी हा उद्दीष्ट डोळ्यासमोर ठेवून स्तुत्य उपक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. याप्रसंगी विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करताना कहालकर बोलत होते.

भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तथा विश्वरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी सुद्धा जगाला ज्ञानाविषयी सखोल मार्गदर्शन केले आहे. यात वाचनक्रिया अत्यंत महत्याची बाब असून याचमुळे महापुरुषही घडले आहेत. सलग १८ तास वाचन करून बाबासाहेबांनी जगापुढे आदर्श निर्माण केला. राज्यघटना लिहिण्याचा सन्मानसुद्धा त्यांच्या वाचन प्रक्रियेमुळेच त्यांना प्राप्त झाला. त्यामुळे बाबासाहेब तथा डॉ. अब्दुल कलाम यांच्यासारखी ज्ञानसंपन्न व्यक्ती निर्माण होण्यासाठी वाचनप्रक्रिया महत्याची आहे, असे प्रेरणादायी विचारही मुख्याध्यापक कहालकर यांनी व्यक्त केले.

शाळेत विद्यार्थ्यांना वाचनाची सवय लागावी यासाठी शाळेतील प्रांगणात सुंदर अशी परसबाग तयार करून त्याला रिंगण घालण्यात आले. त्यात या विद्यार्थ्यांना वाचन व लेखन किती महत्याचे आहे याबाबत मार्गदर्शन करण्यात येते. वाचन प्रेरणा दिवसाच्या निमित्तानेही विविध कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते.

या कार्यक्रमासाठी सहायक शिक्षक विनोद सहदेवकर, नाना कठाणे, पालिकचंद बिसने, चंद्रशेखर कापगते, यशवंत गायधने, केशव वडेकर यांनी सहकार्य केले. ग्रंथालय विद्यार्थ्यांच्या हातात देण्याच्या या उपक्रमाबाबत केंद्रप्रमुख खुशाल हरडे, शाळा व्यवस्थापन समितीचे अध्यक्ष चंद्रधर तिरमारे, सरपंच महेश धुर्वे, ग्रामसेवक भोतमांगे यांच्यासह पालकगण आणि ग्रामस्थांनी कौतुक केले आहे.

Hello Bhandara
Page No. 2 Oct 27, 2019
Powered by: erelego.com

३) मतदार जनजागृती : विधायक का चुनाव दिवाली के करीब आने की संभावना है। ऐसा अंदाज हमें जब पाठशाला शुरू हुई तबसें ही था। ऑक्टोंबर मे मतदार जनजागृती

कार्यक्रम संपन्न कैसा करेंगे ऐसी चर्चा हमने की थी। पाठशाला में रंगोली उपक्रम से मतदार जागरण के कुछ घोषवाक्य बच्चों को लिखने का प्रशिक्षण शिक्षण देने का मनोदय निश्चित किया गया था।

''मतदार राजा जागा हो, लोकशाहीचा धागा हो'' ऐसे कई प्रकार के वाक्योंका छात्रोंने लिखने का शिक्षण देना है। ऐसा तय हुआ था।

जे तय हुआ था उसकी अंमलबजावनी हमने पाठशाला में की। निवडणुक विभाग के अधिकारीयोंको जब पता चला तो वह अधिकारी अभिनंदन करने के लिए पाठशाला पहुंचे। देखकर अचंबीत हुए । आदर्श मतदान केंद्र घोषीत करने का मनोदय भी प्रकट किया।

छात्रोंने यही घोषवाक्य अपने अपने घरमें बहोत सुंदर अक्षरों मे लीखे। यह चर्चा सर्वत्र जिल्हा में फैली। माता पिता गावकरी आनंदीत हो उठे। अखबार में प्रसंशा छपके आइ। इससे गॉववाले हर्षित हुए ।

गॉव मे बॅड पथक के माध्यम से अनोखी रॅली निकाली गई। यह बात भी अखबार में छपके आयी। इससे समाज समुदाय के साथ भागिदारी होने मे सहयोग मिला।

दिव्यांग ज्येष्ठ नागरिक व नवमतदारांकरीता स्वीप कार्यक्रमातून जनजागृती

मतदारा तू जागा हो, लोकशाहीचा धागा हो !

लोकमत न्यूज नेटवर्क

भंडारा : साकोली विधानसभा क्षेत्रातील लाखनी तालुक्यात स्वीप कार्यक्रमांतर्गत विविध उपक्रम राबवून व्यापक जनजागृती केल्या जात आहे. मिरेगाव येथे मतदारा तू जागा हो, लोकशाहीचा धागा, हो मतदान करा ह अशा घोषवाक्यातून दिव्यांग नवमतदार व ज्येष्ठ मतदारांमध्ये मतदानाची व्यापक जनजागृती करुन आवाहन करण्यात आले.

तहसीलदार विराणी यांच्या मार्गदर्शनात लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव, सोनमाळा, भूगाव, मेंढा, पळसगाव, कोलारी निमगाव व कन्हाळगाव येथे नोडल अधिकारी नरेश नवघरे ग्रामसेवक भोतमांगे, मेश्राम, तलमले, गायधने, बारसे, नंदेश्वर यांच्या पथकाने स्वीप कार्यक्रमांतर्गत मतदानाची जनजागृती करण्यात आली. नागरिकांना लोकशाहीला बळकट करण्यासाठी मतदानाचे महत्व, ईव्हिएम व व्हिव्हिपॅटबाबत प्रात्यक्षिक तसेच दिव्यांग मतदारांकरीता मतदान केंद्रावर उपलब्ध असलेल्या सुविधांची माहिती देण्यात आली. नवमतदारांना मतदान प्रक्रियेत सहभागी होण्यासाठी मिरेगाव येथे मतदारा तु जागा हो, लोकशाहीचा धागा हो, मतदान करा ह अशा स्वरुपाचे संदेश संदेश रांगोळी व रोपटे यांच्या माध्यमातून देवून मतदारांना आवाहन करण्यात आले. उपरोक्त गावात पार पडलेल्या जनजागृती कार्यक्रमाला नागरिकांचा उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळत आहे.

लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव, सोनमाळा, भूगाव, मेंढा, पळसगाव, कोलारी, निमगाव येथे जनजागृती करण्यात आली.

१० व ११ ऑक्टोबरला जनजागृती

- १० ऑक्टोबरला गोंडेगाव, गुरठा, इसापूर, नेहारवाणी, मचारणा , कवडसी येथे दिवसभर स्वीप कार्यक्रमांतर्गत मतदारांना जागृत केल्या जाणार आहे. ११ ऑक्टोबरला पोहरा, लाखोरी, गोंडसावरी, लाखनी, लाखनी शासकीय आयटीआय, येथे ग्रामपंचायत कार्यालयात मतदान जनजागृतीचा कार्यक्रम घेण्यात येणार आहे.

४)

दिपोत्सव : स्कुली बच्चे इनके अध्ययन में वृद्धी हो इसके लिए समाज का सहभाग

जरूरी है। समाज को सहभागी करणा है। उनको यदी भागीदार बनाना है तो उन्हें साथ लेकर चलना होगा। उनके साथ रहना होगा।

यह विचार से सब दिवाली पर्व गॉववाले घर घर में मनाते है। तो हम पाठशाला में दिवाली पर्व मनायेंगे। दिये जलायेंगे, गॉववालोंको मिठाई खिलायेंगे, छात्र और उनके माता पिता पाठशाला में त्योहार पर आधा घंटे के लिए बूलाने का नियोजन हमने कर रखा था। दिवाली में पाठशाला का आधा सत्र पुरा होता है।

यह सब ध्यान मे रखकर सब छात्रोंसे दिवाली छुट्टी के दिनांक २३/१०/२०१९ का वादा किया गया। आप दिया लेकर पाठशाला मे आओ। लडडु खाकर जाओ। यह बात कभी किसी पाठशाला मे नही हुई थी। छात्र और उनके मॉ बॉप को अचंबीत करने वाली थी। सही मे प्रधान अध्यापक डमदेव कहालकर लड्डु खिलाने वाले है या नही। यह जिज्ञासा छात्रों मे उठी।

प्रधान अध्यापक ठिक ५ बजे पाठशाला में हाजीर हुए । जिन बच्चों को जिम्मेदारी दि थी उन्होने रंगोली और गोवर्धन पर्वत बनाके रखें थे।

सब छात्र एक एक करके दिये लेकर आए । सबको लड्डु और सेव खिलाया गया। गॉव के सरपंच, पुजारी, शाला व्यवस्थापन समिती के सभी लोग और माता पिता उपस्थीत थे। संगित महफिल छात्रोंद्वारा संपन्न हुयी। सभिने दिये जलाए । मिठा मुह करके सब छात्र उनके माता पिता गॉव के पुजारी बडे हर्षित होकर अपने अपने घर लौटे। पहले दिया विद्यामंदिर के प्रांगण मे जलाया गया। बंधुभाव और एकात्मता का दर्शन हुआ। समाज और पाठशाला का संबंध मधुर हुआ।

विभाग ४

❖ प्रधानअध्यापक ने पाठशाला मे किये हुए आमुलाग्र बदलाव के स्वरूप/निष्पत्तीका वर्णन

आमुलाग्र बदलाव इसीका नाम है जो संपुर्ण बदलाव है । यदि व्यक्तिका आमुलाग्र बदलाव उसके बारे मे हम कुछ कहते या लिखते तो सर्वप्रथम बाहरी रंगरूपका वर्णन होता है । पाठशाला में कियें हुए आमुलाग्र बदलाव के स्वरूप निश्पत्तीका वर्णन करते है । तो रंगरूपकी बात करणी होगी ।

पहले पाठशाला का रंगरूप कैसा दिखता और आज कैसे दिखता है । यह फोटोग्राफ बतातें है । पहले देखने से आनंद या समाधाण नही मिलता था । अभि इसी क्षण देखो तो देखते रहे ऐसा प्रतित होता है । प्रवेशद्वार आकर्षक लुभावना लगता है । आवार दिवाल अपने आकंर्षक रंग और उसके उपर ग्रामगितामें बतायेंहुए सुविचार ओवी से सज्जीत और अंकीत है । पहले कुछ नही लिखा था । ना ही रंग लगा था ।

पाठशाला मे पहले बगीचा नही था । कहा कहा अव्यवस्थीत रूप से महेंदी बोई थी । जिसको आकार नही दिया था । आकार देनेवाली कैंची नही थी । प्रधानाध्यापक ने सर्वप्रथम कैंची खरीदी । और यशवंत गायधने अध्यापक को जिम्मेदारी दी और उन्होने वह अच्छेसे निभाई ।

मैदान के मध्यभाग में बहोत सुंदर दिखने वाला बगिचा तैयार किया गया । जो पहले नही था । इस बगिचे मे बैठकर छात्र पढाई करते है । बगिचे मे बैठकर पढाई करणे का आनंद लेते है । प्रसन्नता के कारण पढनेवाले छात्र का मन अध्ययन मे लगना शुरू हो गया । इसके पहले ऐसा कुछ नही था । पाठशाला खुलते ही छात्र आते थे । इतरस्त्र इधर उधर घुमते थे । अभि ऐसा नही है ।

हर एक छात्र ने पाठशाल मे अपने घर से अपने हाथोंसे बनाया हुआ झाडु पाठशाला मे रखा है । और झाडु पकडकर सर्वप्रथम सफाई के काम मे लगते है । उनके उपवर देखरेख करणेवाला शालेय मंत्रीमंडल के छात्र ध्यान देते है । मुतारीघर, शौच्छालय, शालेय परिसर कुछ ही समय मे साफ सुथरा हो जाता है । इसके पहले यह क्रिया कलाप नही थी । छात्र और उनके माता पिता इन्होने झाडु पाठशाला में भेजनें का प्रबंध किया है । यह हमारे नियोजन का एक हिस्सा था । जिसके परिणाम

स्वरूप दस या पंधरह मिनट के अंदर अंदर दिवाली के त्योहार जैसा प्रसन्न वातावरण बन जाता है । जिसमे शैक्षणिक रंगोली का विशेष रूप प्रकट किया जाता है ।

शैक्षणिक रंगोली के प्रणेता प्रधानाध्यापक डमदेव कहालकर है । उनका यह दावा है हम स्वयं शैक्षणिक रंगोली उपक्रंम के प्रणेता है । शैक्षणिक रंगोली में छात्र रूचि रखते है जिसका सराव उनके घर मे भी होते जा रहा है । अपने परिवार का नाम लेकर जैसे ‘‘ पाखमोडे ’’ परिवार आपका सहर्ष स्वागत करता है । ऐसे वाक्य रंगोलीद्वारा बडे खुबसुरत ढंग से लिखते है ।

हर सप्ताह का पाठ्यक्रम कर कक्षा अपने अपने कक्षा के बाहर बडें ही उल्हास, उत्साह सें सुंदरता से लिखते है ।

यह सब पहले नही था । जो अभि है । परिपाठ यह पाठशाला का आत्मा है । यह हमारे अध्यापक, प्रधानाध्यापक इनका मानना है । परिपाठ में पाठशाला बुद्धीमत्ता की झलक दिखाई पडती है । परिपाठ में छात्र बडे उल्लास और प्रसन्नता से सहभागी होते है । सभि विषय इसमें समाहीत रहते है । इसकी गरीमा नैमीत्तीक शिक्षक, छात्र इनके जन्मदिन मनाते है । जन्मदिन की बधाई और हार्मोनियम तथा बासुरी वादन, बॅड पथक इनसे शोभा अधिकाधिक बढती है ।

परिपाठ में एक समस्या थी । जब धुप तेज होती थी ऐसे हालातमे छात्र परेशान होते थे । इसी कारण आधा अधुरा परिपाठ होता था । इस समस्या का हल धुप से बचाव करनेवाली हरी नेट लगााने से हुआ । अभि छात्र बडी सहजता और प्रसन्नता से परीपाठ मे सामील सभी मुद्‌दोंका आनंद लेते है ।

यह पहले नही था । नेट के कारण यह संभव हुआ । परीपाठ और प्रार्थना इनकी बैठक व्यवस्था में सुधार किया गया । परीपाठ में हरदिन आदर्श छात्र का चयन कीया जाता है । उसे बक्षीस के रूप मे बडें सन्मान के साथ तालीयों की गजरमे बॅचेस लगाया जाता है

यह पहले नही था । परीपाठ का समापन कदमचाल में चलाकर अध्यापक और चयन किया हुआ छात्र इनको सॅल्युट करके कतार के साथ होता है ।

हर कक्षा मे अध्यापक बडी रंजकता और हर्षउल्लास से पढाते है । छात्र गृहपाठ करके ही घर से पाठशाला आते है । यह बोझ नही लगता बडी सहजता से

छात्र गृहपाठ करते है ।यह पहले नही होता था । अध्ययन निष्पत्ती के अनुसार कक्षा मे पढाया जाता है ।

अध्ययन निष्पत्ती

कृती	भाषा	निष्पत्ती	कृती	अध्ययन निष्पत्ती
१ ली	मुळाक्षर वाचन	अक्षरवाचन करना और शब्द बनाना	१० जव २९ तक संख्यांका परिचय करना	दिये हुए अंक इतने वस्तुकी गनना करते है। अंक वाचन लेखन करते है।
२ री	काना मात्रा युक्त शब्दोंका पठन करणा	अक्षर को काना स्वरचिन्ह जोडकर शब्द बनाकर लिखना	वजाबाकी/घटाव का अर्थ समजना (चित्रोंद्वारा)	वस्तुएँ गिनते है और रेखाएँ निकालना और अलग करके हल करना
३ री	वाक्य का पठन (जोडाक्षर युक्त)	जोडाक्षर युक्त शब्द का पठन करणा	गुणाकार क्रिया का परिचय, दो अंक को एक अंक से गुणना	वस्तुओंके गट बनाना और गुणाकार का अर्थ समजना
४ थी	श्रुतलेखन करवाना	जोडाक्षर युक्त शब्दोंका लेखन करणा	भागाकार का परिचय करणा	वस्तुओंको समान भाग में बाटना
५ वी	उतारावाचन करने	दियेहुये किताब का पठन करणा	चार पाच अंक वाली संख्या का पठन	

इयत्त १ ली २ री के लीए बिनहातकी बेरीज और घटाव

३ री , बेरीज वजा, (घटाव), गुणाकार एक अंक का एक अंक से यह कमता

४ थी – संख्याज्ञान, तिन अंकी संख्याओंका मिलन घटाव और गुणाकार(दो अंकी संख्या) भाग देना

५ वी – चार पाच अंकी संख्याओंका मिलन और घटाव, गुणा, दो अकी संख्याओंको एक अंक से भाग देना

६ वी – छे अंकी संख्याओंको मिलाना, घटाव, गुणाकार और तिन अंकी संख्याओंको दो अंकरूपी संख्या से भाग देना

७ वी – सात अंक वाली संख्यावाचन, सात अंकवाली संख्याओंकी बेरीज, वजा, चार अंकवालनी संख्याओंको दो अंकी संख्या से भागना.

हर दिन ४.०० से ४.३० तक जिनका हमने स्तरनिहाय वर्गिकरण करके रखा है। ऐसे छात्र जिन जिन अध्यापक को जिन जिन स्तर की जिम्मेदारी दि है उनके उनके पास छात्र बैठते है। अध्यापक की देखरेख मे अध्ययन करते है।

हर दिन ४.३० ते ५.०० तक का समय खेल कुद का व्यायाम प्रकार होता है।

उस दिन का समापन सब छात्र बगिचें मे गोला मे बैठकर प्रधानाध्यापक और अध्यापक इनकी दुसरी दिन की संचना सुनकर वंदे मातरम् होती है। सब छात्र परीवहन समिति के नियम के अनुरूप कतार में धिमी गती मे अध्यापक, प्रधानाध्यापक इन सभी को नमन करते हुए हसते हसते घर लौटते है।

विद्यार्थ्यांना शिंदीच्या फांद्यापासून बंध बनविण्याचे प्रशिक्षण

लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव येथील जिल्हा परिषद शाळेचा उपक्रम

लोकमत न्यूज़ नेटवर्क

पालांदूर (चौ.) : विद्यार्थ्यांना स्वावलंबी बनविण्याकरिता स्वयंरोजगार करताना शिक्षण घेता यावे, या उदात्त हेतूने प्रेरीत होत स्थानिक ठिकाणी नैसर्गिक अधिवासातून शून्य खर्चात उपलब्ध होत असलेल्या शिंदीच्या फांद्यापासून धानाचे गठ्ठे बांधण्याकरिता मुख्याध्यापक तथा आदर्श शिक्षक पुरस्कर्ते डमदेव कहालकर यांनी शाळेतच कार्यशाळा उभारून विद्यार्थ्यांना बंधचे धडे दिले.

स्पर्धेच्या काळात प्रत्येकालाच नोकरी शक्य नाही. निदान खेड्यात तरी अजीबात नाही. त्यामुळे विद्यार्थ्यांनी विद्यार्थी दशेपासूनच स्वयंरोजगाराचे धडे मिळावे. त्यांची कुशलता लक्षात घेऊन या उपक्रमाचे आयोजन करण्यात आले होते. खरीप हंगाम कापणीच्या तोंडावर बंधाला मोठी मागणी आहे. तणसाचे बंध सगळ्यांना माहिती आहेत. यात मेहनत मोठी आहे. मात्र शिंदीच्या बंधाला व्यवस्थित गुंफण करीत शून्य खर्चात धान बांधण्याला उत्तम बांध कमी खर्चात शेतकऱ्याला मिळतो. हे हेरून कहालकर यांनी विद्यार्थ्यांना बंध तयार करण्याचे प्रशिक्षण देत गावकऱ्यांचे लक्ष वेधले.

याकरिता सहयोगी शिक्षक विनोद सहदेवकर, चंद्रशेखर कापगते, पालीकचंद बिसने, यशवंत गायधने, नाना कठाणे यांनी सहकार्य केले. या उपक्रमाचे केंद्रप्रमुख हरडे, शाळा व्यवस्थापन समिती अध्यक्ष चक्रधर तिरमारे यांनी कौतूक केले.

शिंदीच्या फांद्यापासून बंध बनविण्याचे प्रशिक्षण देताना डमदेव कहालकर.

शिक्षकांची दूरदृष्टी

- बंधाचा हंगाम किमान १५-२५ दिवस चालतो. यातून गावाला रोजगार मिळतो. प्रत्येक कर्त्या कुटुंबाला या हंगामात ७-१० हजार रुपयाची आमदनी होते. या व्यवसायाला खर्च शून्य असून गावाजवळ शिंदीचे झाडे मुबलक आहेत. आई वडीलांना मुलांच्या हातभाराने नक्कीच मदत होणार आहे. याकरिता शाळेचे महत्व व शिक्षकांची दूरदृष्टी कामाला आली हे विशेष.

संडे अँकर । अधिकाऱ्यांनी दिली भेट, विद्यार्थ्यांच्या पाठीवर कौतुकाची थाप

नाविण्यपूर्ण उपक्रमांनी चर्चेत आली मिरेगावची शाळा

ग्रामगीतेतील ओवींची साकारली रांगोळी

विद्यार्थ्यांनी ग्रामगीतेतील विविध ओवी रांगोळीद्वारे सुवाच्छ अक्षरात रेखाटले आहेत. अनेक घोषवाक्य या विद्यार्थ्यांनी लिहून काढले आहेत. विद्यार्थ्यांचे प्रयत्न निष्फळ जाणार नाही अशी आशाही व्यक्त केली आहे.

लोकमत न्यूज नेटवर्क

भंडारा : लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव येथील जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा सध्या चर्चेचा विषय ठरत आहे. विविध नाविण्यपूर्ण उपक्रमांनी शाळेच्या पतप्रतिष्ठेत वाढ झाली असून अधिकाऱ्यांच्या भेटीनंतर शाळेचे नावलौकीक वाढले आहे.

विशेष म्हणजे काही दिवसांपूर्वी अधिकाऱ्यांनी या शाळेला भेट दिली होती. यात सदर शाळेत आदर्श मतदार केंद्र उभारण्याबाबतही सूचना केली होती. त्या पार्श्वभूमीवर शाळेचा परिसर स्वच्छ व सुंदर करुन लोकशाहीचा उत्सव थाटात पार पाडण्यासाठी शिक्षकांसह पालकगण व विद्यार्थ्यांनीही प्रयत्न सुरु केले आहेत.

विशेष म्हणजे आजघडीला शाळेचा परिसर स्वच्छ झाला असून आकर्षक रांगोळ्यांनी परिसर नटून तयार आहे. सोमवारी होणाऱ्या मतदानासाठी नागरिकांना या शाळेत आल्यावर सजावटीची भुरळ झाल्याशिवाय राहणार नाही, याची दक्षता घेतली जात आहे.

उपक्रमासाठी शिक्षक व विद्यार्थी सहकार्य करीत आहेत.

लाखनीचे तहसीलदार, खंडविकास अधिकारी यांनी या शाळेत भेट दिली. तसेच विद्यार्थ्यांनाही कौतूकाची थाप देत त्यांना भविष्यकालीन संधीबाबत मार्गदर्शनही केले. यावेळी मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर, शिक्षक विनोद सहदेवकर, पालिकचंद बिसने, चंद्रशेखर कापगते, नाना कठाणे, यशवंत गायधने, केशव वडेकर आदी उपस्थित होते. लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव शाळा आदर्श प्रेरणादायी मतदान केंद्र घोषीत करण्याची शिफारस करीत असल्याचेही त्यांनी सांगितले.

मिरेगाव शाळेचा उपक्रम :.भरपावसात विद्यार्थ्यांनी कविता म्हणत केली रोवणी

विद्यार्थ्यांनी पाडली पात, शेतकऱ्यांनी दिली कौतुकाची थाप

लोकमत न्यूज नेटवर्क

पालांदूर : भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. मात्र आधुनिक शिक्षण पध्दतीने विद्यार्थ्यांचे शेतीशी असलेले नाते तुटत चालले आहे. शेतीत कुणी काम करायला नाही. विद्यार्थ्यांमध्ये शेतीबद्दल आस्था निर्माण व्हावी यासाठी लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव शाळेने अभिनव उपक्रम राबविला. विद्यार्थ्यांनी भर पावसात शालेय कविता म्हणत अर्धा तास रोवणी केली. विद्यार्थ्यांनी पाडली पात, अन् शेतकऱ्यांनी दिली ौतुकाची थाप.

मिरेगाव येथील विद्यार्थी शेतात रोवणीचे धडे घेताना.

शिक्षकांनी मनावर घेतले तर कोणताही उपक्रम यशस्वी होऊ शकतो. लाखनी तालुक्यातील मिरेगाव ही शाळा उपक्रमशिल शाळा म्हणून नावारुपास आली आहे. सर्जनशील आणि कल्पक शिक्षक येथे नानाविध उपक्रम राबवित आहेत. सध्या जिल्ह्यात भात रोवणीचा हंगाम सुरु आहे. विद्यार्थ्यांचे कृषीशी नाते घट्ट व्हावे यासाठी शाळेने रोवणीचा उपक्रम राबविण्याचा निश्चय केला. शाळेचे मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांनी आपल्या शिक्षकांना या उपक्रमाची माहिती दिली. विद्यार्थ्यांना सहभागी करुन घेण्याचा निर्णय घेण्यात आला. भर पावसात विद्यार्थी उत्साहाने शेतात पोहचले. रोवण्याचे प्रात्याक्षीक शिक्षण देवून पाठ गिरविणे सुरु झाले. विद्यार्थ्यांनी मोठ्या आनंदाने गुडघाभर पाण्यात उभे राहून रोवणीचे काम केले. आपली मुले रोवणीच्य कामात तरबेज होत असल्याचे पाहून पालकही आनंदीत झाले. विद्यार्थ्यांचा पाठीवर कौतुकाची थाप दिली. शेतकरी, गावकरी आणि शाळा यांच्यातील दुरावा कमी झाला. मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर म्हणाले, विद्यार्थ्यांचे शेतीशी असलेले नाते घट्ट करण्यासोबतच त्यांना निसर्गाचे सानिध्य मिळवून देण्याचा हा प्रयत्न आहे. निसर्गोपचारामध्ये प्रकृती स्वास्थ्यासाठी मातीत गाढून घेतात. चिखलात पाय अधिक वेळ ठेवल्याने शरीरातील घातक द्रव्य माती शोषून घेते. या उपक्रमासाठी शिक्षक सहदेवकर, नाना कठाणे, चंद्रशेखर कापगते, पालिकांचद बिसने, यशवंत गायधने, केशव वडेकर आदींनी सहकार्य केले.

पोवाडा सादर करतांना

पावडीवर चालतांना

पणपाई पाखरांसाठी

मुलांना बासरी व पेटी वाजवून दाखवतांना

पालीकचंद बिसने सर

विभाग ५

पाठशाला के प्रधानअध्यापक खुद को पाठशाला का नेता समझकर स्वयं को कैसे देख रहे हों?

(कार्यपद्धती, दृष्टीकोन मुल्योंद्वारा कैसा बदलाव किया)

जो सही दिशा मे सच्चा प्रयास करता है वह जिस चिज की प्राप्ती चाहता है वह चिज उसे सहजता से प्राप्त होती है।

हमारी जिल्हा परिषद उच्च प्राथमीक पाठशाला मिरेंगांव पंचायत समिती लाखनी जिल्हा भंडारा इन्होने सही दिशा में सच्चे प्रयास किए है। जिनका परिनाम स्वपरूप छात्रोंमे राष्ट्रभक्ती, सौजन्यशिलता, वक्तशिरपना, निटनेटकेपना, संवेदनशिलता, वैज्ञानिक दृष्टीकोन, श्रमप्रतिष्ठा, स्त्रि–पुरूष समानता, सर्वधर्म समभाव राष्ट्रीय एकात्मता यह सब मुल्य छात्रों मे विकसीत हुए है।

यदि हम पेड बबुल का बोते है और इच्छा आम की करते है तो वह भुल है। हमारी अज्ञानता प्रकट होती है। इसी सिद्धांत को ध्यान मे रखकर हमने जो बोया वही पाया। सटीक पाया। शत्प्रतिशत बडी सहजता से पाया।

इसका कारण हमारी कार्यपद्धती, हमारा दृष्टीकोन महत्वपुर्ण विवेकपुर्ण है। हमने अध्यापक और हमारे व्यवस्थापन समिती के अध्यक्ष और सदस्य गण, छात्र, उनके माता पिता इनकी सभा मे गुणवत्ता विकास के लिए जो कार्यपद्धती और जो दृष्टीकोन रखा था। इस सभी का परिणाम स्वरूप हमने यश पाया।

मै प्रधानाध्यापक के नाते हर्षित और समाधानी हु। मुझे तो शिक्षण क्षेत्र मे आकर जो नाम और शैक्षणिक अच्छा काम करणा था वो कर लिया। मै कृतार्थ का अनुभव करता हु। स्वयं को अहोभाग्यशाली मानता हु। शिक्षणविभाग में अध्यापक के नाते मैने पुरी जिंदगीमे जो मेहनत की, परीश्रम किया वह परी रूप से सफल हुआ ऐसा प्रतित होता है।

काम के बदले में मै अभितक तनखा (पगार) लिया! लेता आया इनमें मुझे जो आनंद, संतुष्टी और तृप्तता नही मिली उससे कही गुणा अधिक यह शोध संशोधन में आनंद संतुष्टी और तृप्तता मिली।

पाठशाला में पैर डालते ही हर कदम पे मै सजग और सावधान रहकर सावधानी करखता रहा। मेरे साथी अध्यापक, छात्र, गांव के पुढारी इन सभी को सावधानी के लिए सजग करता रहा। हर क्रिया कलाप उनका होनेवाला परीणाम मिलनेवाला फल, हर क्रियाकलाप से किस मुल्य का संवर्धन होगा इसका ज्ञान और ध्यान हम सभीर ने रखा। जिसके परीणाम स्वरूप यह मुकाम पर आ पहुंचे।

जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक पाठशाला का नाम अखबार की बात से पुरे भंडारा जिल्हे के गॉव गॉव मे पहुंचा। मेरे साथी अध्यापक गण और मै स्वयं प्रधानाध्यापक हम सभी हो हमारे गांव की, हमारे शिक्षा विभाग के अधिकारी इन सबको मान सन्मान और पतप्रतिष्ठा प्राप्त हो गई है। समाज ने हमे प्रतिष्ठीत किया है।

इन सब में मेंरे सहकारी अध्यापक, शाळा व्यवस्थापन समिती के सभी लोग, ग्रामपंचायत के सरपंच, गॉव के आजी माजी पुढारी, मेरे लाडले छात्र, मेरे प्रिय पालक जो छात्रोंके माता पिता है इन सभी का योगदान और सहयोग है। ऐसा मै कृतज्ञतापुर्वक घोषित करता हुॅ। इसमे मेरे अकेले का योगदान नही है। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से बहोतसारें लोगो का योगदान है। इन सभीको मै धन्यवाद देता हुॅ और वंदन और नमन करता हुॅ।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येत आहे की, जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा येथील शाळा व्यवस्थापन समिती अध्यक्ष श्री. चक्रधरजी तिरमारे म्हणुन या शाळेचा शैक्षणिक सत्रात २०१९–२० मध्ये शाळेच्या गुणवत्ता वाढिकरीता नेहमीच सहशालेय उपक्रम, दैनिक उपक्रम, विद्यार्थ्यांची शिस्त, विद्यार्थ्यांच्या सुट्टीच्या दिवशी अभ्यासपुरक काम इ. बाबीत नाविण्याची जोड देणारी शाळा म्हणून नावलौकीक मिळवत आहे.

शाळेचे मुख्याध्यापक श्री. डी. पी. कहालकर व त्यांचे सर्व शिक्षक हे नेहमी शालेय शिस्त व सहशालेय उपक्रम घेण्याकरीता नेहमीच सहकार्य करीत असतात.

करीता त्यांना शालेय प्रगतीकरीता खुप खुप शुभेच्छा.

स्थळ : मिरेगाव

दिनांक : 30/10/2019

अध्यक्ष
शा. व्य. समिती मिरेगाव

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येत आहे की, जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा ह्या शाळेचा शैक्षणिक सत्र २०१९–२० चा शैक्षणिक गुणवत्तेचा दर्जा, सहशालेय उपक्रम, दैनिक उपक्रम विद्यार्थ्यांची शिस्त, विद्यार्थ्यांच्या सुट्टीच्या दिवशी अभ्यासपुरक काम इ. बाबीत नाविण्याची जोड देणारी शाळा म्हणुन समोर येत आहे.

शाळेचे मुख्याध्यापक श्री. डी. पी. कहालकर व त्यांची सर्व शिक्षक चमु यांचे हार्दिक अभिनंदन व उच्च प्रगतीसाठी शुभेच्छा.

स्थळ :– पं. स. लाखनी

दिनांक. ३०.१०.२०१९

गट शिक्षणाधिकारी
पंचायत समिती लाखनी

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येत आहे की, ग्राम मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा येथील सरपंच श्री. महेश धुर्वे म्हणुन या शाळेचा शैक्षणिक सत्रात २०१९–२० मध्ये शाळेच्या गुणवत्ता वाढिकरीता नेहमीच सहशालेय उपक्रम, दैनिक उपक्रम, विद्यार्थ्यांची शिस्त, विद्यार्थ्यांच्या सुट्टीच्या दिवशी अभ्यासपुरक काम इ. बाबीत नाविण्याची जोड देणारी शाळा म्हणून नावलौकीक मिळवत आहे.

शाळेचे मुख्याध्यापक श्री. डी. पी. कहालकर व त्यांचे सर्व शिक्षक हे नेहमी शालेय शिस्त व सहशालेय उपक्रम घेण्याकरीता नेहमीच सहकार्य करीत असतात.

करीता त्यांना शालेय प्रगतीकरीता खुप खुप शुभेच्छा.

आपला

महेश धुर्वे

सरपंच, ग्राम पंचायत मिरेगांव

स्थळ : मिरेगांव

दिनांक : ३०/१०/२०१९

पाठशाला का नाम — जिल्हा परिषद उच्च प्राथमीक पाठशाला

मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा पिन ४४१८०९

♦ **UDISE No- 27100503601**

प्रधानाध्यापक का नाम — श्री. डमदेव पांडुरंग कहालकर

प्रधानाध्यापक, (एम.ए. बि.एड)

जि.प. उच्च प्राथमिक पाठशाला मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा पिन 441809

मोबाईल नं. 9764384189, 9022310881

शाळेचा Email ID . :—
zillaparishadmiregaon@gmail.com

❖ प्रभावि अध्ययन के लिए प्रभावशाली उपक्रम ❖

१) बिज संकलन/संग्रह :—

हम सब छात्राओसे मिलकर सत्र के सुरूवात में जुन जुलै महिने में तरह — तरह के बिज का हमनें संकलन किया । इसमें गवार, भेंडी, ककडी, करेला,दोडका, बरबटी, लौकी, आदी बिजोंका छात्रोंद्वारा बिजप्रसार किया । सबको हमने बाट दिया ।

इस उपक्रमसें छात्रोंमे वनस्पतीओंका परिचय हुआ । छात्रोंकी निरीक्षण क्षमता बढी और उनमे समज बढी और पाठशाला और समाज उनका मधुर संबंध बना ।

२) पत्रमैत्री :—

हमारी पाठशाला में हमनें छात्रोंको उनके मामा, काका, मित्र को पत्र लिखने का उपक्रम चलाया इसमें पत्रव्यवहार समज मे ंआया । पत्र लिखते समय बडों का आदर, मित्र को नमस्कार सह सब बाते छात्रोंमें वृद्धींगत हुयी । पत्रलेखन से छात्रोंने पत्रपेटी, पोस्टमास्टर, पिनकोड, अंतर्देशिय पत्र इन बातों का परिचय लिया । उनका उत्साह बढा । वर्तमानपत्र में फोटो देखकर वो रोमांचित हो उठे ।

पत्र लिखते समय वे अपनी भाषा मे व्यस्त हो रहे है और धिरे—धिरे प्रमाणित भाषा का उपयोग कर रहे है। जहॉ कठिणाइयॉ आती है । वहॉ छात्र अध्यापक को बिना झिझककर पुछते है ।

हम छात्रोंको छुट्टी का अर्ज लिखने को कहते है और उसमे ंपालक की स्वाक्षरी लेने को कहते है । इससे पालक अध्यापक और छात्र के बिच में आंतरक्रिया हुयीं ।

३) शाला प्रवेश जागृती :—

‘‘ चलो चलो स्कुल चले

सब पढे आगे बढे ।।’’

‘‘ चला चला शाळेला चला’’

ऐसी घोषणाऍं देते हुए हमने गॉव मे रॅली निकाली उससे पालकभेट की, गृहभेट की, इससे समाज का शिक्षक पाठशाला के प्रती लोगों का नजरीया सकारात्मक बना । 100% पटनोंदणीका उद्‌देश सफल बना ।

४) शालेय उपयोगी वस्तुओंकी दुकान तथा ड्रायफ्रुट्स :—

हमारा मिरेगांव दुर्गम भाग में होने के कारण छात्रोंको उपयोगी सामानके लिए दिक्कत होती थी। गांव की दुकान में पुरा सामान नही मिलता था। इसलिए हमने स्कुलमेही उपयोगी वस्तु तथा ड्रायफ्रुट्स की दुकान स्कुलमेही लगाइ। उसकी जिम्मेदारी जो बच्चे घर मे रहते थे उनको ही दि। इससे पेन, किताब, रीफील, पेन्सील, रबर, पीन आदी चिजे स्कुलमेंही मिलने लगी।

हमारे कुछ बच्चों को परिसर के प्रभाव से खर्रा, गुटखा, मसाला पुडी आदी चिजों का शौक लगा था। हमने उनसे छुटकारा पाने के लिए क्या खाना चाहीए और क्या नही खाना चाहीए इनका मार्गदर्शन पी.एच.सी. के डॉक्टरोंद्वारा किया। अच्छी चिजें खाने की आदत डालने के लिए हमने स्कुल मे बदाम, खारक, पिस्ता, पेनखजुर, अंजिर आदी चिजें रखे और उनके फायदे बताए। इनसे हमारे बच्चोंकी खर्रे कि आदत छूटी। वे अवकाश मे दुकान चलाने लगे और हिसाब करने लगे। जो बच्चे अक्सर घर मे रहा करते थे वे स्कुल में हरदिन आने लगे। और प्रसन्नता से अध्ययन करने लगे। परिपाठ में एक समस्या थी । जब धुप तेज होती थी ऐसे हालातमे छात्र परेशान होते थे । इसी कारण आधा अधुरा परिपाठ होता था । इस समस्या का हल धुप से बचाव करनेवाली हरी नेट लगााने से हुआ । अभि छात्र बडी सहजता और प्रसन्नता से परीपाठ मे सामील सभी मुद्दोंका आनंद लेते है ।

यह पहले नही था । नेट के कारण यह संभव हुआ । परीपाठ और प्रार्थना इनकी बैठक व्यवस्था में सुधार किया गया । परीपाठ में हरदिन आदर्श छात्र का चयन कीया जाता है । उसे बक्षीस के रूप मे बडें सन्मान के साथ तालीयों की गजरमे बॅचेस लगाया जाता है

यह पहले नही था । परीपाठ का समापन कदमचाल में चलाकर अध्यापक और चयन किया हुआ छात्र इनको सॅल्युट करके कतार के साथ होता है ।

हर कक्षा मे अध्यापक बडी रंजकता और हर्षउल्लास से पढाते है । छात्र गृहपाठ करके ही घर से पाठशाला आते है । यह बोझ नही लगता बडी सहजता से छात्र गृहपाठ करते है ।यह पहले नही होता था । अध्ययन निष्पत्ती के अनुसार कक्षा मे पढाया जाता है ।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित करण्यात येत आहे की, जिल्हा परिषद उच्च प्राथमिक शाळा मिरेगांव ता. लाखनी जि. भंडारा ह्या शाळेचा शैक्षणिक सत्र २०१९—२० चा शैक्षणिक गुणवत्तेचा दर्जा, सहशालेय उपक्रम, दैनिक उपक्रम विद्यार्थ्यांची शिस्त, विद्यार्थ्यांच्या सुट्टीच्या दिवशी अभ्यासपुरक काम इ. बाबीत नाविण्याची जोड देणारी शाळा म्हणुन समोर येत आहे.

मी शाळेची मुख्याध्यापक श्री. डी. पी. कहालकर वरील माहीती सत्य असल्याचे प्रमाणित करीत आहे

मुख्याध्यापक
जि.प. उच्च प्राथ. शाळा मिरेगांव
पं.स. लाखनी

स्थळ :— मिरेगाव

दिनांक. ३०.१०.२०१९

विशेष फोटो

लोकमत

चर्चेतील व्यक्तीशी थेट संवाद

व्यसनमुक्त चळवळ निर्माण होणे अतिआवश्यक असताना त्यावर समाजात जागृती मोठ्या प्रमाणात झाली पाहिजे.

दारूचे व्यसन ही समाजाला लागलेली कीड

व्यसनमुक्त समाज हेच जीवनाचे ध्येय -डमदेव कहालकर

संडे स्पेशल मुलाखत

इंद्रपाल कटकवार ।
लोकमत न्यूज नेटवर्क

मद्य प्राशन करणे म्हणजे बायको पोरांचे रक्त पिण्यासारखे आहे. हे टाहो फोडून सांगितल्यानंतरही नागरिक ऐकत नाही. त्यावर एकच आणि एकच उपाय म्हणजे व्यसनमुक्तीबाबत अहोरात्र जनजागृती. व्यसनमुक्त समाज हेच जीवनाचे ध्येय असून त्यावरच माझे लक्ष केंद्रीत आहे असे उद्गार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व्यसनमुक्ती सेवा पुरस्कारप्राप्त तथा जिल्हा परिषद शाळा मिरेगाव येथील मुख्याध्यापक डमदेव कहालकर यांनी काढले. त्यांच्याशी साधलेला हा संवाद....

व्यसनमुक्त समाज निर्माण होईल काय?

गत अडीच वर्षांपासून मी सेवाव्रताने स्वत:ला झोकून देऊन व्यसनमुक्तीचे कार्य करीत आहे. दारु हटाव, गाव बचाव हेच माझे ब्रीद वाक्य आहे. चुलबंद नदीच्या खोऱ्यापासून ते जिथे मला संधी मिळेल तिथे मी जाऊन व्यसनमुक्तीवर कार्य करीत आहे. जिल्ह्यातील भव्य व्यसनमुक्ती गायत्री कलशयात्रा ही प्रेरणादायी ठरली आहे. व्यसनमुक्त समाज निर्माण होईल असा मला आशावाद आहे.

या कार्यात कधी अडचणी आल्या?

थोर समाजसुधारक बाबा आमटे यांनी कुष्ठरोगांसाठी कार्य केले आहे. व्यसन हे एक समाजाला लागलेले कुष्ठरोगच आहे. परंतु काही समाजकंटकांना माझे व्यसनमुक्तीचे कार्य आवडले नाही. मी अडथळा आणल्याने मला मारण्याचीही धमकीवजा देणारे पत्र पाठविले. पण मी न घाबरता पुन्हा जोमाने व्यसनमुक्तीच्या कामात झोकून दिले.

विद्यार्थ्यांसाठी संदेश

भावी पिढीला व्यसनापासून परावृत्त करून सशक्त भारताची संकल्पना उदयास आणू शकतो. विद्यार्थ्यांना कोणतेही वाईट व्यसन लागू नये म्हणून शाळेतच विद्यार्थी-मालक-ग्राहक हे दुकान सुरु केले आहे. मद्यप्राशन करणे हे शरीराला घातक असून त्याऐवजी खारक, बदाम, पिस्ता या सारख्या पोषण वस्तू खाव्यात, असा संदेश दिला जात आहे. तंबाखू-खर्राचे व्यसन हे कधीही घातकच आहे. या कामासाठी कुटुंबासह अनेकांचे पाठबळ लाभत आहे.

व्यसन हे समाजाला घातक अशी बाब आहे. ज्या गोष्टीपासून शरीराला बाधा पोहचू शकते, ती बाब करुच नये, हेच मी नेहमी पटवून देण्याचा प्रयत्न करतो. एक उत्कृष्ट मनुष्य उत्कृष्ट समाजाची निर्मिती करु शकतो, असे माझे प्रांजळ मत आहे.

व्यसनमुक्ती उपचार केंद्र

उन्हाळ्यात पानपोई लावून त्याठिकाणी व्यसनमुक्तीविषयी बॅनर लावण्यात येतील. ज्या ठिकाणी प्रदर्शनी किंवा यात्रा भरते याठिकाणीही व्यसनमुक्तीचे कार्य अहोरात्र केले जाते. व्यसनमुक्ती उपचार व मार्गदर्शन केंद्र सुरु केले आहे. यात शिवतीर्थ मानव कल्याणकारी संस्था खराशी या नावाने हे कार्य सुरु आहे. यात हजारोंच्या संख्येने नागरिक दरवर्षी सहभागी होत आहे. मनावर घेतले तर कुठलीही बाब अशक्य नाही. हीच कल्पना उदयोन्मुख शिक्षक व मार्गदर्शक डमदेव कहालकर यांनी समोर आणली आहे.

Hello Bhandara
Page No. 1 Aug 18, 2019
Powered by: erelego.com

कवी. पालीकचंद बिसने स.शि मिरेगाव इनके काव्य संग्रह का प्रकाशन

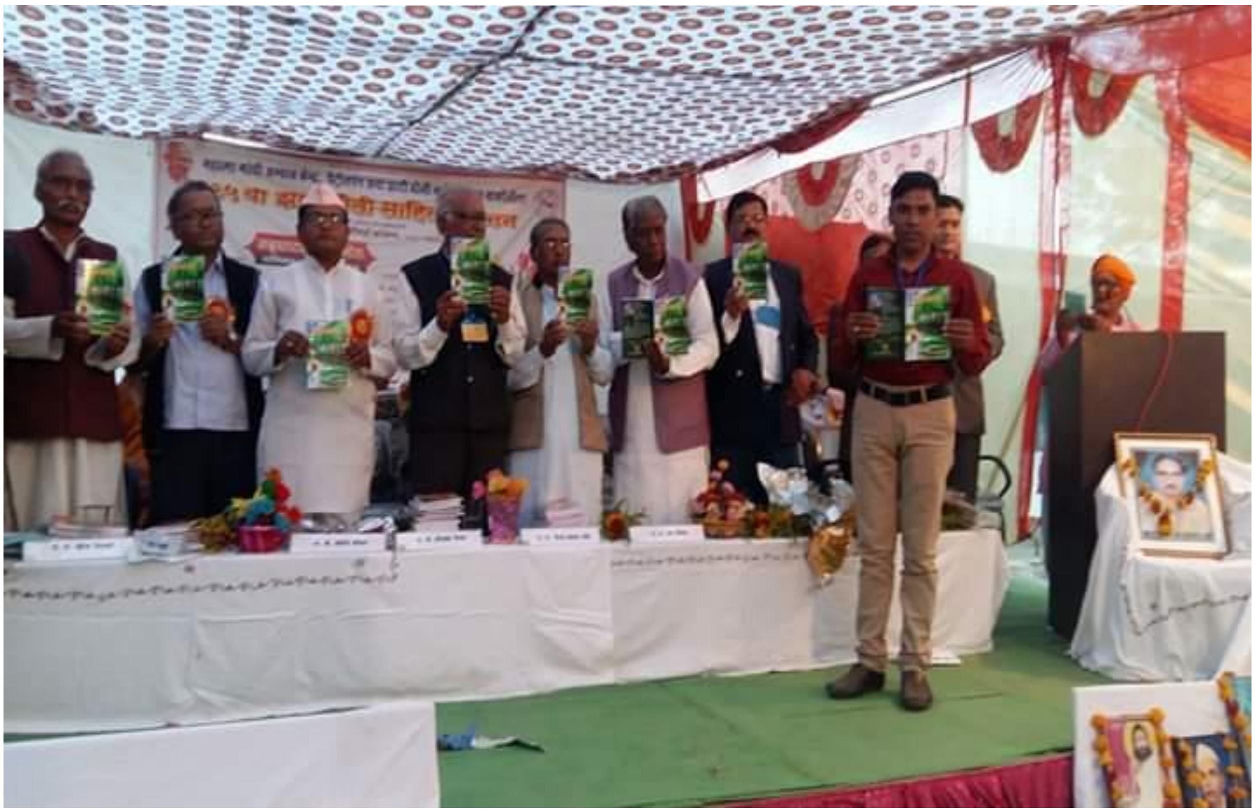

छात्र प्रयोग करते हूये

❖ धन्यवाद ❖